

र

ड.

ता

ल

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

फगुआसँ एक दिन पूर्व अखिल ब्रह्माण्ड संसारव्य समितिः एतः आवरणः बैसक बजाओल गेल छल । विचारणीय विषय छल—वसन्ताभिनन्दन समारोह कोना मनाओल जाय । समिति दूरदर्शी रस विलासी चार्वाक सिद्धान्तानुसार्यः साहित्यकारलोकोक्ति सटुबोगसँ सघटित भेल अछि । एकर अध्यक्ष छथि सत्ताव्य-धिरामणि श्रीमान् शीतल सूर्यजी तथा सचिवका एकरे समलंकृत करैत छथि कविकुल कुमुदकलाधर श्री कुलागारजी । एकर सदस्य श्रीमती तँ बहुते गोट छथि, तुलापि उल्लेखनीय नाम छनि सर्वश्री गगनाम्बुज, उष्णेन्दु, तरलाधित कनक, कृष्ण हुताशन, श्वेतकान्त, विपाद कुक्कुट, एकाक्षपाद, शुभ्र-कज्जल, नील दुग्ध, मयीदा-मदन, मतवल्लभ आ नादामकुन्द जी । एहि समितिक अध्यक्ष शीतलसूर्य जीकेँ संगीलोक्ति सलाह शोधन सेहो कहैत छथि । एकर कारण छैक जे केवल साठि गोट सिगरेट आ दू गोट क्लाईसँ हिनकर अहोरात्र निवहि भऽ जाइत छनि । जे काँच कटोरेसँ सलाह माडि लैत छथिन तँ आपस करबाक कोना प्रश्न नहि रहि जाइत छनि । सिगरेट पीबामे ई तेहन कुशल छथि जे योगाभ्यासक बले माटर जेना धूम्र फेकब सहज भऽ गेल छनि । आव तँ योग शब्दक पहिल अक्षर वर्णमालाक अनुसार फानिकऽ अगिला अक्षरपर चल गेल छनि तँ पहिले चमत्कार उत्पन्न करबाक हेतु जे करैत छलाह से सहज भऽ गेलनि अछि । शरीरमे मांसक बलामे हडडी सँह छनि, जकरा ई लोहाक करनि मानैत छथि । अस्तु ।

समितिक बैसक सचिव महादय अप-नहि ओहि ठाम आहूत कयने छलाह । लावण्यमय मखानक प्लेटक संग चाहक व्यवस्था कयने छलाह, परन्तु आजुक गोष्ठीक मुख्य आकर्षण छल पान । कुलागारजी एहन-एहन विशिष्ट साहित्य-

कार, जे भविष्यक पीढ़ीकेँ मृत्युकेँ चकारबाक हेतु निराति चिन्तन आ साहित्य सज्जामे डूबल रहैत छथि, एतः ठाम जूट रहल छथि, तँ किछु वैशिष्ट्य रखलनि । आवक पान कुलागारजी अपनो हावे लऱि छलाह । पान शब्दमे नहि छलाह प्रत्यत पानकेँ अलंकृत कयने छलाह । छला सुगन्धक दतरा, भूजल सुगन्ध अतिवृत्ति सुगन्धक संग अक्षिणी, ज्योति, केसरि, लस्तराक संग बनारसी रंग-विरंग मसाला कऽ लवंग खड्डामे खिल्लिकेँ माडिने छलाह । जदमि कारीपत्ती, लीन सय नम्बर बाबा छापक अतिरिक्त, डडगर जदी खयनिहार सभक हेतु बत्तीस नम्बर जदी सेहो छलनि । एतः अंतरक शीशमे पिपरमित मडक रखने छलाह । सभसँ विलक्षण मसाला एतः छलनि जे साधारणतः लोककेँ नहि भेटैत छैक । ओ मसाला तँ पानकेँ लऽ कऽ उडि गेल रहैक ।

चाह-पानक बाद बैसक कार्यवाही आरम्भ भेल । लोक जे जे पान चिबौने जायत तँ मुहकुण्डाबोरल भेल जाइक । आनि गेटे तँ जदी खाइत छलाह से सभ बीच-बीचमे पीक फेकबाक हेतु उठितो छलाह, मुदा शीतलसूर्य जी जदी नहि खाइत छथि तँ खिल्लिपर खिल्लि चिबौने जाथि आ पीक घटघट घोटने जाथि । सभक मुहसँ रंग-विरंग सुगन्ध बहराईत छलनि से सम्पूर्ण वातावरणकेँ आर्मादित कयने कल जाइत छल ।

बैसकमे वसन्ताभिनन्दनपर विचार-विमर्श करैत निणय लेल गेल जे विशेष लम्फलम्फा नहि कऽ थोड़ संन वस्तु हो आ से ठोस एवं उत्तम । अतः थोड़ेक खीर बना लेल जाय, मांस आ मालपूआ तँ रहबे करत । एक-आध टा तरकारी बनवा लेल जाय । फगुआक हेतु विशेष वस्तु व्यवस्था तँ रहबेक चाही आ साझमे

महामायाकेँ समर्पित कऽ रमकी आवि गेलक बाद जमि कऽ कविगोष्ठी हो जाहिमे विशुद्ध कवि मात्र रहथि । बाहरी लोकक प्रवेश एकदम निषिद्ध राखल जाय । मयीदा-मदनजीक प्रस्ताव छलनि जे एहि कविगोष्ठीमे सम्पूर्ण आवरणकेँ कोन हृदयसँ मिलल जाय । ई आवरण समाज द्वारा व्यक्ति कऽ रूपपर थोपल थिक । यदि आवरण आवश्यक रहैत तँ प्रकृति एताहि तरहें जन्म दितैत । हम सभ कवि छी, निरंकुशः कवयः, सांभाजिक समस्त श्रृंखलाकेँ उतारि कऽ फकि देवाक अछि । हमरालोकनिकेँ समाजकेँ मुक्त करबाक अछि । सभ्यता ओ संस्कृतिक नामपर हमरालोकनिकेँ प्रकृतिसँ दूर कयल गेल अछि । हमसभ होमकेँ सहन नहि कऽ सकैत छी । समाज बन्धनमुक्त हो, जन्मक भावेँ सर्वत विचरण करय । प्रकृति निष्ठ निरंकुश जीवन-यापन करबाक प्रवृत्तिकेँ आगू बढ़यबाक हेतु एहि कविगोष्ठीमे निरावृत भऽ भाग लैत जाइ । प्रगतिशील डेग स्वयं उठायब, समाजक समस्त स्वयं आरंभ रूपमे उपस्थित होयब, दोहरा प्रतिबद्धताकेँ जड़ि-मूलसँ उखड़ि फेकब आवश्यक अछि । जेना कुकुर-बानर, कीट-पतंग, पशु-पक्षी समस्त जीव जन्मक रहैत अछि, तखन मनुष्य भऽ कऽ लाज बन्धन स्वीकार करब परम मुख्यता थिक । एहि प्रस्तावक सर्वसम्मतिसेँ समर्थन कयल गेल । अर्थव्यवस्थाक हेतु कालिह चाहक बेर अथित आठ बजे सभ गेटे दस-दस टाका संग आनी सेहो निर्णय लेल गेल । चाहत भार अध्यक्ष अपन उठौलनि । एकाक्षपादकेँ व्यवस्थाक भार देल गेलनि आ विपाद कुक्कुटजी कोषाध्यक्ष मनःनीत भेलाह । बैसक समाप्त भेल । शीतल सूर्यजी पानक प्रसंसा करैत चलैत-चलैत दू खिल्लि पुनः क्लातर राखि लेलनि ।

दोसर दिन आठ बजे कुलागारजी अध्यक्ष अर्थात् शीतल सूर्य जीक आँठ बिदा भेलाह तँ बाटेमे उष्णेन्दु जी भेटि गेलथिन, परन्तु ओ किछु मनहूस छलाह । ओ गेटे शीतल सूर्यजीक ओहि ठाम पहुँचलाह तँ अतिवृत्ति स्थिति देखि दंग रहि गेलाह । एतः डाक्टर बैसल, लोकसभ शीतल सूर्यजीक तरबा-तारु दरैत आ हुनकर माय विलखि-विलखि कऽ विलाप करैत । उ सँ ६ बाजि गेल । आनि सदस्यलोकनि बेराबेरी अबैत गेलाह अवश्य, मुदा कटोरेमे उत्साह नहि, स्पर्धित ओ उत्सासक स्थानपर उदासी, मनहूसी । सभकेँ एकत्र देखि शीतल सूर्यजी आव-विह्वल भऽ गेलाह । ओ श्रीखिसँ दहो-बहो नोर जय्य लगलनि । दुकीर लागल स्वयं

(शेष पृष्ठ २८ पर)

दस दितियनि । ई फेकबाक अभ्यास कहियासँ अछि ? महंगी आकाश ठेकल छैक आ, अहाँक बुद्धि पाताल चल गेल अछि ।”

किछु कालक पश्चात् हम आ हुनक पड़ोसी विदा भऽ गेलहुँ । एहि बीचमे संतजीके सामने अबैत देखियनि तँ गलीमे घुसि जाइ, डेरापर आबथि तँ पछिला गेट दऽ बाहर चल जाइ । मानि, हुनक छाहोसँ छिटकल फिरी ।

एही बीचमे एक दिन संतजीक पड़ोसी भेटलाह । कहलनि— संतजी तँ परम अस्वस्थ छथि । ई भुब छल कि हम हुनक डेरा दिस विदा भेलहुँ । डेरापर देखलियनि जे एक टा घरमे बड़का टा ठेग जरि रहल छैक, घरक छेद धरिकै मुनि देल गेल छैक, धूमन जरि रहल छैक आ संतजी एक टा खाटपर तीन टा माट-माट कम्बल आ ताहिपरसँ एक टा तुराइ आढन पड़ल छथि । माय, भाउज आ पत्नी सभ लगमे बैसल छथि । एक गाटे लहसुन पीसिकऽ अनलथिन आ दाँतर गाटे पाठपर मालिस करऽ लगलथिन । एक गाटे स्त्री प्याजक रस एक टा कटारामे लेन अलथिन आ संतजीकेँ पिया दलथिन । हम अचम्भित भेल ई सभ देखैत रहलहुँ । किछु कालक पश्चात् संतजी कहलनि— बाँचि गेलहुँ । मरऽ लागल छलहुँ । हम जनिकासँ दाँसा लेने रही से कहलनि जे ब्रह्ममुहूर्तमे उठि कऽ स्नान कयल करू । संतजी एक टा टेबलेट खयलनि आ तखन फेर कऽ लगलाह— हम एम्हर व्रत, एकादशी ततबा कयलि-ऐक जे शरीर दुबल भऽ गेल । से ओहि दिन अन्हराखे चार बजे उठिकऽ गंगाजीमे स्नान करऽ गेलहुँ । कुहेस ततबा लागल रहेक जे हाथ-हाथ नहि मुञ्चैत रहैक । एतबामे की भेलक से नहि जानि, शरीरमे कंपन भेल आ साँजे हम उनटि गेलहुँ । बेहोसक हालतमे उठा-पुठाकऽ लोक डेरा-पर अनलक । बादमे गामसँ ईहो सभ अबैत गेलाह । माय आ भाउज उठिकऽ भितर चल गेलथिन । संतजीकेँ पत्नी हमरा उलहनैत कहलनि— कने अहाँ सभ नहि राकलथनि ! उपदेश दितियनि, बुझावतियनि । ई तँ अजौहिमे मरि जतथि !

संतजी बजलाह— उपदेश तँ हमहीं दैत रहियनि । असलमे हमरा नशा भऽ गेल रहथि । करार सम्मानन काज कऽ रहल छल । अन्हरे कहाँनसँ एक टा बबाजाक फेरमे पड़ि गेल रही ।

रङ्गताल

(पृष्ठ ८ क शेषांश)

कहलथिन—एक मात्र अवोध नैना, निराश्रिता पत्नी आ ई हमर वृद्धा माय सभ अन्याय भऽ रहल छथि । हम अही लोकनिक भरोसपर हिनका सभकेँ छोड़ने जाइत छियनि । मितताक मूल्य चुकाबी आ हिनकालोकनिकेँ अण्ण वृक्षियनि । तखन मितलोकनि पुछलथिन की होइत अछि जे एना जीवनसँ सर्वथा निराश भऽ गेलहुँ अछि ? डाक्टर साहेब बाजि उठलाह— भिनसरसँ लघुश्रममे खाली शोणित खसैत छनि । जाँचक हेतु एक गोटेकेँ लघी लऽ पठौने छियनि । तखन बेराबेरी सभ सदकवि लोकनि कहऽ लगलथिन—हमरो लघी लाल भेल अछि तँ हमरो लघी लाल भेल अछि । एही कारणेँ सभ गाटे मनहुँस छलाह ।

अन्तमे स्थितिक गम्भीरता देखि कुलांगरजी पोल खोललनि जे आब घबड़यबाक कोनो प्रयोजन नहि । असलमे हम रातिखन जे घान लगौने रही से खर-चूतक बदलामे एक-एक चननकाठी आलरंगे घऽ देने रहिऐक । जे जेक पीक घाँटेने गेल होयब तनिकर लघी ततेक लाल भेल होयत । ताबत डाक्टरक जाँच रिपोर्ट सेहो पहुँचि गेल जे लघीमे शोणित नहि, रंग घारल अछि । शीतलपूर्वजी ओढ़ना-तोढ़ना फेकि फानिकऽ बाहर आबि गेलाह आ डाक्टर बगारबगर हुनक मुँह देखऽ लगलथिन । बूढ़ीक आँखिमे नार रहबे करनि, दोरपर उल्लास सेहो पसरि गेलनि— कहलथिन—एहन रङ्गताल तोरे लोकनिसँ होअय ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

बहिरा

(पृष्ठ २० क शेषांश)

आदिमीपर ठेपा फेकब तँ फल तँ किछु भेटबे करत । कारण आइ-काल्हक युगमे कल्पवृक्षक प्रतिरूप तँ सरकारे थिक । मुदा अफसोस एतबे जे भने तँ कहलकैक जे कऽ र्घऽ अयलीहोरा आ माँड़ पसौलनि जीरा” से ठेपाउज करैत अछि क्यो, लाठी खाइत अछि क्यो आ जेल जाइत अछि क्यो मुदा, जखन फल प्राप्तिक बेर अबैत छैक तखन काशीक अरजलपर भाग करबा ले’ विश्वनाथ आबि जाइत छथि आ ओ जे कहबी छैक जे बसल

बिलाडिकेँ तँ बखड़ा से तकरा चरिताथ कऽ लैत छथि ।

हमरा तँ सभसँ बेसी दया पुलिस-बलापर अबैत अछि जे बेचारा सभ दिन गरीबक बहु सभक भोजी ए बनल रहल जकरा करारो सरकारसँ किछु शिकाइत होइत छैक ओ अरत ताम पुलिसेवकार झड़ैत अछि ! बेचारा पुलिसवल अंगरेजी-क राजमे बदनाम भऽ रहल काँपेसक राजमे बदनाम भेल आ आब जनता पाटीक राजमे बदनाम भऽ रहल अछि । ई तँ पुलिसवलकेँ धन्य कही जे ई सोचि देह पाथर कयने रहैत अछि जे साँजे मुइलाह तँ कानब दते रहित ओ जे कही छैक— जे गय हेहरी, गय धेयरी, कोना जियैत छै ?—रोड़ा-ढेपा खाइत छी भने जियैत छी” तकरेपरि भऽ जयतँ बेचारसँ भेल ।

जे होअय एतबा तँ अवश्य जे एहि उकुर, धुकुरसँ धीना-पूतकेँ एतबा लाभ तँ होइते छैक जे बसल काम स्कूल-कालेज बन्द भऽ जाइत छैक । आइ-काल्हक युगमे एना विना मंगने छुट्टी भेटब कोन सी नाय-क बात थिक आ ताहिपरसँ जे ई छुट्टी । फगुआकेँ लगाकऽ भेटय तँ सहजहि धीवीसँ थिक्कन । हँ, तखन कविले लोकनिकेँ चाहियनि जे जमाताकेँ देखैत ओ लोकनि फगुआ-क नब-नब गीत लिखथि । आब दसरथ सागू बरियात कहबासँ बाज नहि चलतनि कारण आइ-काल्ह महत्त्व जलूस सजबाक छैक बरियात सजबाक नहि । एहिना आब जे क्यो कहथिन जे नकबेसर कागा ले भागा’ तँ सहजहि क्यो कोनो ने देतनि कारण आइ-काल्ह तँ देखैत छी जे बीच चौराहापर लोकक गरदनसँ दिन-देखार सोनाक सिकड़ी घीचिकऽ लोक भागि जाइत छैक । एहना स्थितिमे नकबेसरि के पुछैत अछि के ? बेचारा पुलिसवल सभकेँ प्रदर्शनक झंझटिसँ छुट्टी भेटतक तँ सनहा लिब लेतनि । कहबाक तात्पर्य ई जे आब नवका स्टाइलक फगुआ गीत बनबाक चाही ।

कहुँ कि हम फूसि कहैत छी ?

वसन्त गीत

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ।

कहू, कोइली कुहुकि की बाजय
विजन वनमे इतरा
सुनू, कोइली कुहुकि रस बोरय
कलश उमड़ा-उमड़ा
मातल आइ वसन्तक आइ न
कली दैत अछि रस-आमन्त्रण
तेँ जूही लता फुलायल
उपवनमे छितरा
तेँ कोइली कुहुकि रस बोरय
विजन वनमे इतरा
माकन्दक वन सौरभ घोरल
वृन्त-वृन्त अछि मधु-रस बोरल
तेँ कनक मंजरीकेर
करय निशि भरि पहरा
सुनू, कोइली कुहुकि तेँ बाजय
विजन वनमे इतरा
कहू, गुन-गुन कऽ की सभ गावय
कली लग जा भम्हरा
सुनू, गुन-गुन कऽ गून चलावय
मतल मदमे भम्हरा
लागत किरण कली मुसकायल
मधुकरकेर मन-प्राण जुड़ायल
तेँ दखिन पवन बहि रहल
एना अगरा-अगरा
झुमि रहल लता-तर अपनामे
लहरा लहरा
छिलकि रहल रस-कलश भरल ई
वन उपवन अछि तरल-तरल ई
लखि आकुल तबधल प्रान दान किछु दी हमरा
तेँ गुन-गुन कऽ मन बहटारय कली लग जा भम्हरा
तेँ नाचय मगन मन अपन अपन सुधि बुधि बिसरा
सुनू, गुन-गुन कऽ मन बहटारय कली लग जा भम्हरा
तेहि मधुजीवीके आन कतहु कोनहु असरा
कहू दखिन पवन बहि रहल किए लहरा लहरा
झुमि रहल लता-तर अपनामे अगरा
लेब सुरभि परसबजा घर-घर
मादकता व्यापत जा सभपर
बिनु उनटौनहि पतरा करता घर दिस जतरा
तेँ दखिन पवन बहि रहल एना लहरा लहरा

मिश्र टोला, दरभंगा ।

संस्मरण

सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन

। श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

वर्षा एकदशमे संस्कृतक अध्यापनमे लागल छलहुँ । बाहरसँ एक सहकर्मी हाथमे एक निबधित लिफाफ लेने सकेत कयनि—'श्रीमान्, साहित्य अकादमी दिल्लीसँ एक पत्र आयल अछि । बाहर आवि पत्र तँ लऽ लेलक मुदा पुनः अध्यापनमे लागि गेलहुँ । औत्सुक्य बहुत छल । वर्ग बहुरातीक बाद पत्र पढ़ैत कार्यालय धरि अग्रलहुँ । देशक उर्भाग्य छैक जे एखनहुँ सरकारी काज अंगरेजि एमे होइत छैक । पत्रक विषय छल एकांकी नाटकपर एक कार्यशाळा शिविरक आयोजनमे भाग लेबाक हेतु अमरावती जे २० मार्चसँ २५ मार्च धरि नागरी प्रचारिणी सभा भवन, बागमतीमे आयोजित होबखला छल ।

पहिले कार्यशाळाक वास्तविक अर्थबोध नहि भेल । ओहि पत्रमे अंकित छल जे कोनो कथावस्तु अपन मोनमे लेने आबि जकरा एहि ठाम आबि एकांकीक रूप दी । अथवा यदि कोनो एकांकी लेखन-प्रक्रियामे हो तँ सँह संग आनी जकरा एहि अत्रि पूर्ण करी अथवा कोनो लिखलक प्रकाशित, खेल यल एकांकीक पुनर्लेखनक विचार हो तँ सँह संग लेने आबि ।

जयबाक विचार स्थिर करबामे अनेक तारतम्य होबऽ लागल । एक तँ सम्प्रति कोनो एकांकी नाटक लिखबाक ने कोनो नकार छल, ने रचना-प्रक्रियामे छल आ ने लिखित कोनो एकांकीक पुनर्लेखनक विचार छल । दोसर फागुआक छुट्टीक कारणे डेरापर रहनिहार लोक नहि, शून्यमे डेरा छोड़ि कऽ जायब परम कठिन बुझना गेल, परन्तु आकर्षण छल बाबा विश्वनाथक दर्शन जे १९६६ ई० मे अगन महल्लामे श्री १०८ महावीर जीक मन्दिरमे मूर्ति-स्थापित करबाक मूर्ति आनऽ काशी गेल छलहुँ तँकर बाद संयोग नहि लागल छल । अस्तु, तत्काल स्वीकृति पठाव ओ नागरी प्रचारिणी सभाक उपासक श्री शम्भुनाथ वाजपेयीकेँ अगन आगमन सूचना (जेहन पत्रमे निर्देश छल) दऽ देल जाय । समय अग्रल पर परिस्थितिक अनुसार कार्य कयल जाय से निर्णय लेलहुँ ।

अतः संयोग नीक छल । जीवनक जंगलमे बाझल रहितो जखन यदा-कदा किछु-किछु लिखि लेल करैत छी तखन तँ निर्विवादतापूर्वक खाली लेखन कार्यक हेतु आमन्त्रण भेटल अछि । श्रीकृष्णकान्त

मिश्र आ डा. श्री रामदेव झाकेँ सप्रोत्साहित कयलनि । सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन चरितार्थ भेल । १९ मार्चक सन्ध्यामे पटना पहुँचला उत्तर जखन श्री शेखर जीसँ भेट भेल आ ई ज्ञात भेल जे एकसर जाइ वा नहि एहि तारतम्यमे ओहो पड़ल छलहुँ, किन्तु संगक सूख बनारस जाइ, पुरान लोकनिक अछि । आव हमरो उत्साह द्विगुण भऽ गेल । श्री शेखरजी आग्रहपूर्वक अपने डेरापर लेने चल गेलाह । गाड़ी रातिमे २.२० बजेमे छल ।

रातिमे यथासमय हावड़ा अमृतसर मेलसँ विदा भेलहुँ । श्री शर्मा (श्री शेखर जीक आत्मज) काशी देखबाक उद्देश्यसँ सेहो संग लेलाह । किछु समय बचयबाक उद्देश्यसँ बागमतीक टिकट रहितो हमरा-लोकनि मोगलसारीमे ट्रेन छोड़ि देलहुँ आ बससँ ७। बजे सबेरे काशी पहुँचैत गेलहुँ । बस नागरी प्रचारिणी सभा भवनक समीपमे उतारि देलक । फटक लग तीन व्यक्ति ठहरलहुँ, जाहिमे एक वृद्ध, गौरवर्ण, आपत ललाट, छुरिया नाक, श्वेत केश अचकन ओ पंजामामे भव्य व्यक्तित्व, हमरा लोकनिकेँ देखिते कहलनि—“लेखक ? लेखक ? वर्कशौप्पमे भाग लेने के लिए आगे है ?”

हमरा भेल जे यह थिकाह श्री शम्भुनाथ वाजपेयी, जिनका अपन अयबाक सूचना पहिले पठा चुकल छलियनि, परन्तु एहि बातक कचोट रहिए गेल जे सम्पूर्ण प्रवास कालमे वाजपेयी जीक दर्शन हमरा-लोकनिकेँ नहि भऽ सकल । हमरा-लोकनिकेँ आह्लादसँ ई प्रश्न पुछनिहार आ भीतर लऽ गेनिहार छलाह डोगरीक महान साधक, सिद्धहस्त कलाकार, जीवन समर्पित कयनिहार श्री विश्वनाथ खजुरिया । पछ तिसम्पर्कसँ ज्ञात भेल जे ई चौहत्तरिम वर्ष वयस पार कऽ रहल छथि । लोकगीत, लोकनृत्य ओ लोक गाथापर स्वयं बहुत काज कयने छथि । अखिल भारतीय प्रतियोगितामे हिनकाद्वारा निर्देशित डोगरी लोकनृत्य पुरस्कृत भऽ चुकल छथि । एहि प्रवास कालमे हिनकासँ आत्मीयता बहुत बढ़ि गेल ।

तँ श्री खजुरिया जी हमरा लोकनिकेँ आवास धरि लेने गेलाह । सभा-भवनक परिसरमे अतिथि भवनक निर्माण भऽ रहल छैक । हमरा अनुभव भेल जे लेखक लोकनिक आवासक हेतु भवन-निर्माण

कार्यकेँ युद्धस्तरपर अग्रसर कयल गेल छैक । तत्काल रहबाक सभ सुविधाक अस्थायी प्रबन्ध कयल जा रहल छल, पानि, बाथरूम, बिजली, सुतवाक हेतु पलडड़ी, कुर्सी, टेबुल, सराहीमे पानि, गिलास, बाथरूममे मग सभ वस्तुक सुव्यवस्था छल । यद्यपि भवन निर्माणाधीन अछि ।

भोजनादिक व्यवस्थामे भोरे ७ बजे चाह, ११। बजे टोस्टक संग चाह, डेढ़-दू बजे दिनुका आ ६-६। बजे रतुका भोजन प्रस्तुत रहैत छल । ओहिमे वैविध्य, प्रति सन्ध्या तरकारीमे नवीनता, कहियो पूरी, कहियो पोलाव, कहियो तस्मै, कहियो मधुर, कहियो दही आदि । आतिथ्यक हेतु तत्पर रहैत छलाह डा. श्री कैलासचन्द्र शर्मा, तथा श्री श्रीनाथ सिंह, प्रचार मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा । आतिथ्यमे तत्परताक हेतु हिनकालोकनिक जतेक प्रशंसा कयल जाय से थोड़ होयत ।

एहि शिविरमे डोगरी, अंग्रेजी, हिन्दी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत ओ उर्दू एहि दसो भाषाक चारि-चारि गोटा एकांकीकार आहूत छलाह, जाहिमे चौँतीस व्यक्तिक स्वीकृति अकादमीकेँ प्राप्त छलैक, परन्तु सम्मिलित भऽ सकलाह मात्र एकसँ गोटे, जाहिमे शतप्रतिशत उपरिथित छल मैथिली ओ नेपालीक, एकर अतिरिक्त डोगरीक दू, अंग्रेजीक तीन, हिन्दीक एक, पंजाबीक, एक, राजस्थानीक एकक संस्कृतक तीन उर्दूक दू, कश्मीरी शून्य । मैथिलीमे छलाह कलकत्तासँ श्री उदयनागशर्मा सिंह 'नचिकेता', भागलपुरसँ डा. श्री रामेश गुंजन, पटनासँ श्री सुभाष 'शेखर' चौधरी तथा दरभंगासँ एहि पत्रिकक लेखक अर्थात् चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ।

पहिल दिन शिविरक उद्घाटन कार्य भेल । एकर अध्यक्षता कयलनि साहित्य अकादमीक अध्यक्ष श्री उमाशंकर जी जोशी । अकादमीक सचिव श्री आर. एस. केलकर आगत लेखक लोकनिक स्वागत करैत एहि प्रकारक कार्यशाळाक उपयोगितापर प्रकाश देलनि । उद्घाटन भाषण कयलनि आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी । आचार्य द्विवेदी जी वर्तमान एकांकीक प्रसंग विचार व्यक्त करैत जनौलनि जे ओना तँ भारतीय

कथा

आब एकरे लोक त्याग कहैत छैक

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

रातिक साढ़े आठ बाजि रहल छलैक। पण्डित जीक मसियौतक दौहित्र अथलनि आ कहलकनि—“नानाजी, चौराहापर कारमे दुनू मौसाजी आ मञ्जिला भैया बैसल छथिन। एक टा बूढ़ लोकक रहब तँ सभ ठाम आवश्यक होइत छैक, तँ अहाँकेँ कष्ट करऽ कहऽ अथलहुँ अछि। पुनीताक विवाहक एक टा कथा छैक ताहिमे कनेक चलिगैक।

पण्डित जी कुर्त्ता पहिरऽ लगलाह तँ पत्नी कहलथिन—“तरकारी भऽ गेल अछि, सोहारी पकबैत जाइत छी, भोजन कऽ लियऽ तखन जायब। सेरायल अन्न अहाँकेँ खायल नहि जाइत अछि।

नानीक गप्प सुनि मनोहर बाजल—“हुनका साढ़े आठेक समय देल गेल छनि, से तँ एतहि भऽ रहल छैक।

पण्डितजी पत्नीकेँ बुझौलनि—“आइ जँ बाउ भाइ अपने रहितथि अथवा ठाकुर जी जीबैत रहितथि तँ एहि घरमे सम्बन्ध बरबाक हेतु अपनहि केहन-केहन लोक ल लायित रहितथि। तखन हमरा-लोकनिकेँ कोन चिन्ता रहैत ? पितृहीन कन्या छैक आ ई सभ एखन नेने छैक। भोजन तँ लोक सभ दिन दुनू साँझ करिते अछि। ई जीवन-मरणक प्रश्न होइत छैक। धीया-पूताकेँ तावत खोआ-पिया दियौक। हम आयब तँ हमरा लेल चारि टा सोहारी पका देब। एतबा कहैत पण्डित जी जुत्ता पहिरि बिदा भऽ गेलाह।

कारणर दुनू जमायलोकनि गप्प करैत गेलथिन। कोना कथाक उत्थान भेलनि, कोना गप्प आगाँ बढ़लनि, कोना विन्दुपर अटकल छनि आदि गप्पक प्रसंग वरक स्थिति पातक प्रसंग सेहो कहैत गेलथिन जे ओलोकनि बड़ नीक लोक छथि। वर मेडिकल पुरा कऽ हाउस सर्जन भऽ गेल छैक। गामपर एक पतियानीस सात गोट बखारी छैक। चारि जोड़ा हाथी सन-सन बड़द, दू टा लगहरि महीस, बाण प्रोफेसर, पित्ती आफीसर, शहरमे अ-निक ढंगक अपन मकान, बड़का-ब डालोक सभसर-सम्बन्धी, वर देखबामे उब सुन्दर नहि तँ कुरुपो नहि, मनुख नहि। पहिलको कोनो सम्बन्ध वरक तूकसँ कोनो आबि रहल छैक आ तँ मातामह तँ ठाकुर जीक कालेजक क्लास फेलो छलथिन, तँ एहन काज होयबाक सुयोगो लगलैक अछि। ई घर तँ हुनका आखिमे गड़ि गेल छनि। सभ गप्प

तँ भए गेल छैक, आब लेन-देनवला गप्प टा बाँकी छैक। अपने ताहिमे कनेक सम्हारि दिएक, तँ कष्ट देल।

पण्डित जी कहलथिन—“संग नहि करितहुँ तँ हीमे कष्ट होइत। बाउ भाइक दौहित्री की हमर दौहित्री नहि थिक ?

गप्प करैत ८-५० मे सभ गोट प्रोफेसर सहैबक ओतऽ पहुँचैत गेलाह। कक्ष एकदम सजल-सजाओल। एक टा फर्श लागल, ताहिपर उज्जर दण्डप चादिर देल, छोट-छोट चारि टा मशनद, डिस्टेम्पड देवाल, ताहिपर लकड़ी आ माँटिक बनल अनेक मूर्ति सभ सजाओल, एक भाग सोफा सेट लागल, रंग-विरंगक चौखुट, गोल, तिनकोनमा छोट-छोट टेबुल सभ राखल, एक टा पँथ सन टेबुलपर गुलदस्ता, कलमदान, कलेण्डर, लेटरपैड, पेपरवेट सजाओल, गुलदस्तेमे चारि-पाँच टा धुपवत्ती जरैत जकार सुगन्धसँ कक्ष आमोदित।

पण्डितजीलोकनि पाँचो गोट पहुँचलाह तँ एक टा छात हिनकालोकनिकेँ साफापर बैसबाक संकेत करैत कहलकनि—“भीतर खबरि दैत छियनि। पन्द्रह मिनट धरि कक्ष खाली रहल, ततेक काल ई लोकनि कक्षक सूक्ष्मतासँ निरीक्षण आ विवेचन करैत रहलाह। पुन ओ विद्यार्थी आबि पानक तश्तरी आगाँमे दैत कहलकनि—आबि रहल छथि। पुनः दस मिनट स्तब्धता रहल तखन वरक मातामहक छोट भाय अथलथिन। नमस्कार पातीक बाद कहऽ लगलथिन—“ई काज अपने-लोकनिकेँ बड़ जीतल भऽ रहल अछि। आन ठाम तँ एक लाख कहैत छथिन, तँयो मूडपर मूड बजरैत रहैत छनि, मुदा व्यक्तिक विचारक सोझाँ तँ टाकाक कोनो मोल नहि होइत छैक। लेनिहारकेँ कम भेटल तँयो कोनो दुख नहि तथा देनिहारकेँ जँ किछु बेसियो देबऽ पड़लैक तँ उत्साहमे कोनो बाधा नहि। टाका तँ हाथक मेल थिकैक, एम्हरसँ अथल आ ओम्हर चल गेल। असली तँ थिकैक व्यक्तिक संग सम्बन्ध, जकार प्रभाव पुस्त-दर-पुस्त पड़ैत जाइत छैक।

तावत साढ़े नौ बाजि गेलैक तखन वरक पिता अथलथिन। मुँह कोँचियबैत नमस्कार पात कऽ चुप्पी साधि जे बैसि रहलथिन। पण्डित जी जखन एहि बीच दू बेर घड़ी दिस नजरि देलथिन तँ वरक पिता बाजि उठलथिन—एहि काजमे हम

एकदम तेहल्ले छी। वरक मातामहपर छोड़ि देने छियनि। हुनका भुकनी लागल छनि जे सम्बन्ध व्यक्तिक ओतऽ करब। बिनु हुनका अयने गप्प भऽ नहि कऽ सकैत अछि। वेतिया दिमुक एक व्यक्ति विहार सरकारमे डिप्टी सेक्रेट्रीक पदपर छथि। हुनक जीमे ई कथा तेना गड़ि गेल छनि जे हाथ राम, जे खर्च लागत से करब, मुदा ई वर हम अवश्य लऽ जायब। अपना तँ मने-मन एही घरमे करबाक निश्चय भऽ गेल छनि, तँ हुनकेलोकनिकेँ टारि कऽ बिदा करऽ गेलाह अछि। अछि ओ सभ लहरचुट्टा, ने तँ कखन ने आबि गेल रहितथि, किन्तु आब अबिते होथिताह। अपन समाजमे ठाँहि-पठाँहि जवाब दऽ देबाक प्रथा तँ छैक नहि। ओना ओहो काज क्लास वन छैक, एहि घरसँ मैत्री भाव, अपेक्षा-पात बड़ पुरान छैक, तँ मनबन्ध भऽ गेल छनि।

एतबेमे वरक मातामहक पदार्पण भेलनि। हुनक क्रमणत एहन सन जेना कोनो मकानक मोटका धरनि चढ़ावऽ आयल होथि अथवा कोनो ग्रीहवला कटहरक कोनो ढेड फड़िकऽ आयल होथि। तर्जनी आङ्कुरकेँ नकुसी बनाय वपार तथा भट्टपरक घमकेँ पोछैत रुमालसँ मुँह पोछलनि। पण्डित जीकेँ छोड़ि शेष चारू कन्यागत पंथर छबि-छूबि बूढ़केँ प्रणाम कथलथिन। बूढ़ा अपन चातुर्य ओ प्रत्युत्पन्नमतिवृत्तपरिचय गप्प गढ़ि-गढ़ि देबऽ लगलथिन। बजलाह—“इह, ओहो सभ जे लगारी अछि से जुनि पूछ। हम कतेक युक्तिसँ तत्काल हुनकालोकनिकेँ एखन टरकाओल अछि, मुदा बाबू, जँ जल्दी कतहु कथा स्थिर नहि कऽ लैत छी तँ ओलोकनि मानताह नहि। ओकरो घर बड़ पँथ छैक। अपने तँ डिप्टी सेक्रेट्री छथिहे, प्रमोशन सेहो ड्यू छनि। एकर अतिरिक्त परिवारमे चारि गोट क्लास वन औफीसर छैक। जखन गप्पक प्रसंग हमरा भान भेल जे एहि बातक हिनकालोकनिकेँ बड़गौरवछनि, बात-बातमे हमर परिवारमे चारि-चारि गोट क्लास वन औफीसर बजऽलगलह तखन हमहूँ नहलापर दहला देल—वरक मातामह ताहि दिनुक ट्रेण्ड ग्रेजुएट, अपन रेपुटेशन रखनिहार रिटायर्ड हेड मास्टर, माम इंजीनियर, मौसा क्लास वन गजेटेड औफीसर, पित्ती डाक्टर,

शेष पृष्ठ २३ पर

कुहस

(पृष्ठ १७ क शेषांश)

सपना देखत छलीह, धरतीक एक टा बड़का खाधिमे डूबि जयवाक किंवा अपना-के ओहि खाधिमे डूबा देवाक। जोर-जोरसँ बजैत ओहि चुपीसँ अपनाकेँ बचयवाक, नुका रखवाक एकमात्र उपाय हुनक ओऽ सपना छलनि।

“हमरा बिसर धरि अबैत-अबैत सुरुज डूबऽ चल गेलैक। बाँचल इजोतमे ‘ब’ अछर सीबि लेवाक मोने केतकी मुइया कनो हमाक ओहि अछर-पर सोल कयलनि कि दरवर मारने कोम्हरसँ तँ आवि गेलीह बिन्दा ! पाछेँ सँ भरि पाँज घऽ लेलथिन केतकीकेँ—“कहलहुँ ने लालदाइ, आवि गेलाह पाहुन ! हमरे कहल भेल। सरिपोँ आवि गेलाह।

“इस्स —कऽ उठलीह केतकी। हाथक मुइया आङ्कुरमे गड़ि गेलनि। बन्न दऽ सोनित फेकि देलकनि। जहिनाक तहिना ठक् दऽ रहि गेलीह बिन्दा बड़का आँखिक भरिगर पल उठाकऽ एक बेर केतकी बिन्दा दिस देखलथिन। चिन्तित जकाँ झगटिकऽ आङ्कुर घिचलथिन बिन्दा—“देखू लालदाइ, बहुत गड़ि गेल कि ? आङ्कुरक सोनित पोछा गेलैक आ लाली पसरि गेलैक। सोनितक लाली नहि, सिनुरक लाली ! आ, नहा गेलीह ओहि लालीमे जेना केतकी !

पुनाइचक (मोहनपुर) पटना-२३।

विद्यापतिक

(पृष्ठ १२ क शेषांश)

तत्पश्चात् सय बर्षक ऊपर अवस्थामे ओकर निबन्धन अस्वाभाविक लगैत अछि, दोसर तत्पश्चात्क रचना रहैत तँ म० नरसिंह द्वारा सयः सम्पन्न सूर्य-स्थापना सन कीर्तिक विस्तृत उल्लेख नहि तँ तकर संकेतो धरि अवश्य देन रहैत।

तखन १४३० ई० सँ १४५३ ई० धरि मध्य कोन सम्भावित बर्षकेँ विद्यापतिक निधन-तिथि मानल जाय ? ब्रह्मण सर्वस्वक लिपिकार रूप धरक विद्यागुरु अपर विद्यापति सिद्ध भेलासँ एककोटा प्रमाण नहि रहि जाइत अछि जे किछु निश्चित संकेत दैत हो। अत एहि प्रसंग-जनश्रुति सँ पुनः विचारणीय भऽ जाइत छैक। जनश्रुतिक अनुसार अपन सिंह-सना-रोहणक ३ बर्षमासक अनन्तर १४०६-७ ई० मे म० शिवसिंह मुसलमान आक्रान्त सँ लड़ैत अन्तहित भऽ गेलाह आ तकर बर्षाक पश्चात् १४३८-३९ ई० मे महाकवि विद्यापति महाराज शिवसिंहक

श्याम-रूपक स्वप्न-दर्शन कयलनि ओ बुझलनि जे ओ आयु-विहीन भऽ गेलाह अछि —

सपन देखल हम सिवसिंह भूष ।
बतिस वरस पर सामर रूप ॥

बहुत देखल गुरुजन प्राचीन ।

अब भेलहुँ हम आयु-विहीन ॥

आ, १४३९-४० ई० क कार्तिक मासमे हुनक देहान्त गंगाकातमे भऽ गेलनि। उपलब्ध तथ्याङ्क आधारपर विद्यापतिक एहि निधन-तिथिकेँ अस्वीकार करवाक कोनो कारण नहि भेटैत अछि ॥

५६ जी, दिवानातकिया, कटहरवाड़ी,
दरभंगा।

आब एकरे

(पृष्ठ १३ क शेषांश)

पिता प्रोफेसर, एक टा बहिनोय जुड़ी शिथिल मैजिस्ट्रेट, एक टा बहिनोय एस डी ओ विजली बोर्ड आ पिता एखन क्लास टूमे छथिन, मुदा जे दिन ने क्लास वनमे प्रमोशन भेलनि अछि आ सर्वोपरि जे वर सेहो हाउस सर्जन। ओ जे नीतिकार कहने छथिन—समाने शोभते प्रीति से सभ तरहें समतुल्य अछि, खाली परिचय कनेक न्यून आ हमरालोकनि तँ एह जमानामे कूल-मूल बचबैत अयलहुँ अछि। तँ पजियाइसँ कनेक परिचय जेचबवाक समय देल जाय। एक सप्ताहक समय लऽ कोनो-ना पिण्ड छोड़कऽ दौड़ले अयलहुँ अछि। हमरा अपने होइत छल जे दू गोटे नीक लोक दलानपर प्रतीक्षा करैत केहन अव्यवस्थित बुझैत होइताह।

एतेक गप्प एक साँसमे कहलाक बाद बूढाक दृष्टि पण्डित जीपर पड़लनि। नमस्कारक उत्तर दैत कहलथिन—“अपने हिनकालोकनिक संग ? हमरा तँ दृष्टि पड़ले ने छल ।

पण्डित जी बीचेमे कहि बैसलथिन—“एहि कन्याक मतमह हमर साक्षते मसियाँत ।

बूढा बजलाह—“तखन तँ एक टा आरो जबर्दस्त जोर लागि गेलैक। अपने-लोकनि तँ हमर समाजक भूषण थिकहुँ।

पण्डित जी तुरन्त कहलथिन—“सँह तँ जाँचऽ अयलहुँ अछि जे भूषण बुझैत छी अथवा दूषण, ई तँ फलेन परिचीयेत ।

बूढा कहऽ लगलथिन—“मनबन्ध तँ भए गेल छनि सभकेँ पण्डित जी पुन बीचेमे कहलथिन—“नीक लोकमे मनबन्ध भऽ गेला उत्तर मनीब-घ (अंडा आ तर्जनीसँ चानीक रुपैया बनजयवाक मुद्रा

देखबैत) तँ बाधक नहि होइत छैक ।

बूढा गप्पकेँ लोकनि—“एक प्रकारेँ तँ निर्णय जकाँ कऽ चुकल छथि सभ गोटे, केवल आदान-प्रदानक गप्प बाँकी अछि। से पहिने फड़िछा कऽ भऽ जायब आवश्यक होइत छैक, तखन बादमे सम्बन्धमे कोनो कटुता नहि अबैत छैक, अन्यथा

पण्डित जी बजलाह—“जहाँ धरि आदान-प्रदानक गप्प छैक से जे ठाकुर जी स्वयं जीवैत रहितथि

बूढा—“तखन तँ गप्पे ने हो। हुनक विद्वत्ता, हुनक उदात्त विचार, उदाराशय, एह, कहल नहि जाय। हुनक विद्वत्ताक धाख तँ बड़का-बड़का विद्वानलोकनिपर छलनि। जाहि शानसँ श्री जीवन बिगैलनि तेहन तँ समाजमे आङ्कुरपर गनल-गुथल लोक होइताह। हमर तँ क्लास फेलो जकाँ छलाह, मात्र दू वर्ष जूनियर, विद्यार्थी ए जीवनसँ सीनियरलोकनिकेँ हुनक योग्यताक धाख मानऽ पड़ैत छलनि। हुनक गप्प नहि हो, ओ अपने समाजक गौरव छलाह, अवैर्णनीय, अनिर्वचनीय।

पण्डित जी कहलथिन—“अपने तँ नीक जकाँ जनिते छथिनि जे ई सभ नावालिगे रहि गेलाह, ओना सुँदियायल तँ सभ छथि, मुदा जा धरि कतहु सेटल नहि भऽ जाइत जाइ छथि, ता धरि तँ कष्टे छनि। कन्या रूप, गुण, विद्या, शील, गृहकार्यक पटुता कथूमे न्यून नहि, जाहि घरमे जायत ताहि घरक लक्ष्मीए प्रमाणित होयत। तँ अपने आदान-प्रदानक गप्प कहल से हम तँ कन्यागत छी, उपसर्गक योगसँ अक्षय, केवल आ तथा प्र उपसर्गकेँ छोड़ि दान देवाक हेतु उपस्थित भेलहुँ अछि। सम्प्रति समाज विवेककेँ कौण्मूल जकाँ घट दऽ घोटि गेल अछि। नहि तँ दान कयनिहारक हाथ तँ सभ दिन उपरे रहैत आयल छलैक से आइ दाताकेँ अपने हाथ पसारऽ पड़ैत छैक, ई थिकैक युगक विडम्बना। तँ अपनेक सदृश सुशिक्षित ओ विवेकशील परिवारक समक्ष उपस्थित भेल छी, उद्धार कऽ देल जाय। तँ उपसर्गकेँ छोड़ि जे आज्ञा होइक।

बूढाक छोट भाय टीप देलथिन—“पण्डित जी ! अपने तँ शब्दशिल्पी छी, गप्पमे अपनेक पार के पाबि सकैत अछि ?

पण्डित जी चट कहि उठलथिन—“हँ, शब्दशिल्पीकेँ तँ शब्दे सभ अपन विशिष्ट अर्थ रखैत छैक, तँ पृथक्सँ छुच्छे अर्थक प्रश्न नहि उठैत छैक। अपनेकेँ भगवान सभ तरहें सम्पन्न बनीने छथि, भू सम्पत्तिक रूपमे अखाड़ीपर बखारी विद्या तँ साक्षात् सरस्वती अपनेक परिसरमे नाचि रहल छथि। लक्ष्मी ओ सरस्वतीक अपूर्व संगम। वरकेँ अपना भगवान

भऽ सकैत अछि । प्रह्लाद असुर-कुलक रनितो, बलियो तेहनो होइतो, महान् छल-अपूजित । रावण-कार्तवीर्य नीक कुचक होइतो नीच छल । ई दोष-गुण थिके' एकर दय संस्कारक अनुरूप । प्रकृतिके ओना अपरिवर्तनीय मानल जाइत अछि, मुदा जँ सुसंग रहैक, संस्कार अर्जन करय, तँ कद चित् परिवर्तनो सम्भवे थिकेक—व तावण अ प्रतिवेश परिवेश सँ बहुतो नीच लोक, अनेक ठाम नीक—ऊँच—होइत देखल जइत अछि । ते' नीक लोकक संगति चँही—सुसंस्कार अर्जित कयल जयबाक चाही । स्वार्थ परमार्थक प्रति, यथाक्रम, रुचि जायब नीचता उच्चताक सूचक ।

जँ क्यो ई सोचय जे अभावग्रस्त की केहन परमार्थ कऽ सकैत अछि, ओ तँ स्वयं खगल घटल रहैत अछि ? अपना लललतें गौंइठाबीछऽ चल' ई तेहने सन ने होयतैक ? नहि, ई चिन्तन नीक दिशा पकड़बासँ पलायन थिक—वैह कुसंस्कार थिक जे नीक दिस नहि जाय दैत छैक । दरिद्र के थिक, जकर चिन्तन-प्रक्रिया दरिद्र रहैक । सहि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाल । मनसिच परितुष्टे कोऽथवान्को दरिद्रः ?' ओ व्यक्तिये दरिद्र थिक जकर मनमे अपन स्थितिसँ बेसी इच्छा-आकांक्षा धुधु आइत छैक, मन जँ सन्तुष्ट रहैक—जेहने स्थितिमे रहथ, शान्त-आश्वस्त रहथ—तँ दरिद्र किएक ? धन रहितो जकर मन बेसी पावऽ लेल छिछिआइत रहैत छैक, ओ धनी कोना ? कओ दरिद्रे थिक । सन्तोष सधनपर थोड़, चित्त-वृत्तिपर अधिन्तः निर्भर करैत छैक । जकरा थोड़ो होइत, ओ आनक दुःस्थिति देखि, द्रवित भऽ किछु दऽ सकैत अछि । आ, जकरा बहुत रहैत, ओहो अदत्त रहत—जँ मन विशाल नहि रहैक—अद्रुस्वभावक होय । स्वार्थ आ परमार्थ अधलाह-नीक हालतिपर नहि चलैत छैक—ओ लोकक छुगल-उदारतापर चलैत छैक । ते' नीक-ऊँच होयबाक अभिशाप वा वरदान थिक, राक्षसत्व आ देवत्व थिक ।

संसारमे क्यो कानरो किछु उपकार वा अकार कऽ दैत, ते' ने तँ उपकार वा अकार व्यक्ति अकास उठि जाइछ आ ने पताल धलि जाइछ । तत्काल किछु शान्ति वा अशान्ति जे होइछ, कोनो स्थायी स्थिति सम्भव नहि । जे क्यो किछु दैत-वैत अछि अथ उतमता-अवमताक परिचय मात्र दैत अछि । जनाजने नीक-बेजाय उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि । क्यो नीक दृष्टान्त बाय ते' लोक-निराशाक प्रगति होयतैक आ बेजाय बाय ते' अवज्ञाक परम्पराक (शेष पृष्ठ २७ पर)

एकांकी

दि

शा

बो

ध

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

(स्थान—सड़क । दूरपर लाउडस्पीकरपर गीतक कोनो कड़ी मन्द स्वरमे कानमे अबैत, नेपथ्यमे साइकिलक घंटी, मोटरक हार्न आदिक स्वर बीच-बीचमे सुनाइ पडैत । मंचपर अरुणाभ प्रकाश । पर्दा उठैत अछि आ फुलपेन्ट, बुशसर्ट पहिरने, आँखिपर चश्मा हाथमे विनु जरैत सिकरेट लेने सुन्दर मामक एक युवक प्रवेश करैत अछि ।)

सुन्दर—रह, चठ अछि ई बड़ा बाबू । अपनो काज लडटावा हमरे साथपर थापि दैत आ अपने टंडली करैत घुरत । भगि दिन छटा कऽ प्राण लेबापर वृत्त । डाँड-पीठ एकाट्ठा भऽ गेल । एक कप चाहो पीव तकर पलखति नहि भेल । दुइओ टाका बाइली आवि जाय त लडटेके ताहिमे शेर अवश्य चाही । कोनो जिन्न पोसने अछि कि पिशाच ? कनेनो एकांतमे दुइयो टाका कको आवि जाइक की ओकरा तुरन्त खबर लागि जाइत छैक ।

बामा हाथे फुलपेन्ट बामा जेबीपर थपकी दैत सलाइ बाहर करैत अछि आ दहिना हाथक सिकरेट ठोर तर दबवैत सलाइ पजारबाक हेतु काठीके घसैत अछि, काठी जल्दी नहि पजरैत छैक । (दर्शक दिस ताकि)—रह, जमाना बड़ बैमान भऽ गेल । यह सलाइ पहिने होइत छलैक । आवत बैमानमा संभएके कातमे मसाला दैत छैक । सलाइमे आधा काठी

रहबे करत ताबत मसाला खतम । काठीके घसैत अछि, मुदा नहि पजरैत छैक त खिसिया कऽ सलाइके दर्शक दिस फेकि घड़ी दिस आँखि उठा इटकल चल जाइत अछि । परदा उठैत छैक ।)

(शहरक एक ठा सिकस्त कोठली, देवालपर दू-तीन ठा अभिनेत्रीक फोटो लटकल । सोझाँमे टेबुलपर एक ठा टाइम पीस घड़ी, तकरा कातमे एक ठा कुर्सी, कोठलीक एक भागमे मसहरी लागल एक ठा चौकी देखि पडैत छैक । दृष्ट-भूमिमे घुआँ सन देखि पडैत छैक । बीस-बाइस वर्षक एक ठा युवती हाथमे केटली लेने देखि पडैत छैक । केटलीके टेबुलपर रखैत, आँचरस दुनू हाथे दुनू आँखि मलैत—)

युवती—ई जरलाही दाइ केहन तीतल जारनि उठावऽ लऽ अनलक जे आँखि फुटि गेल । ई समझाही लगीचवला

दोकानस आनि कऽ फेक गेल अछि। ई बंमनम' जारनिके पान जकाँ भरि दिन पानिस भिजवैत रहैत छैक की की करैत छैक से ने जानि। कनेक चारि डेग आगू जाय पड़ितैक ते ई धोछिया एकरे दोकानस आनि कऽ राखि देलक अछि। लिखल-पढ़ल लोक ढहनाथल फिरैत छैक एक बजावय सत्रह आवय, मुदा दाइ-मजरनी तकनो ने भेटत ते डरे किछु कहितो ने छिएक। (फेर आँचरस आँखिके पोछि लैत अछि, तबत नेपथ्यस आवज अबैत छैक—चिट्ठी है' आ एक टा लिफाफ खसि पड़ैत छैक। युवती उठावऽ उपरका पत, पढ़ि टेबुलपर राखि दैत छैक।) उनः बाजऽ लगैत अछि—)

युवती—हिनकर कोन दोख, ई त गैसक चुल्हा। कोनऽ लेल छटपट करैत छथि, मुदा हम रोकैत छियनि। दू सालस उपजावाड़ी एक चुटकी नहि भेलैक अछि। तीन बरखस नौकरी करैत छथिन, मुदा माय-बापकेँ सेहन्ता होयतनि जे कहियो पचास-पचास हाथ कऽ देने होयथिन। (घड़ी देखि) आव तँ पाँचसँ उ पर भऽ गेलैक, अबिते होइथिन, पन-पिआइत बनल लहुँ, चाहोक पानि चढ़ाए दैत छिएक। (केटली लऽ जाय लगैत अछि ता सुन्दर प्रवेश कऽ)

सुन्दर—अइ फुर्ती करू, बड़ी फस्ट क्लास फिल्म लगलैक अछि। सबेर नहि जायब तँ टिकटो ने भेटत। (जुत्ता बाहर कऽ चप्पल पहिरैत, कुर्ता बाहर कऽ चौकीपर रखैत अछि।)

युवती—(हाथमे लिफाफ दैत) अहाँ ताबत चिट्ठी पढ़ि लियह, हम चाहक पानि चढ़वैत पनपिआइ लेने चल अबैत छी (कहैत केटली लऽ चल जाइत अछि। युवक लिफाफ फोर्लि पढ़ऽ लगैत अछि।)

स्वस्ति श्री वीआके शुभ आशीर्वाद। हम शरीरें कुशल छी। मनसँ कुशल होयबाक सम्भावना आव नहि बुझना जाइत अछि। अहाँक माय जे अस्वस्थ भेलीह से निकै होयबाक नामे ने लैत छथि। अहाँकेँ घरक परिस्थिति नीक जकाँ बूझल होयबाक चाही। परकाँ सालक बाढ़ि आ एहि सालक रौदो घरकेँ खुक्ख कऽ देलक। अहाँकेँ तीन माससँ पत लिखि रहल छी, मुदा अहाँ कानमे तूर-तेल दऽ बैसल छी। हम जनैत छी जे शहरक खर्च बरबोह भऽ गेल छैक। वस्तुजातक दाम आकाश ठेकि गेल छैक; तैयाँ जकरा घर परिवार छैक से सभकेँ सम्भारिते चलैत अछि। पेटक हेतु अथवा खेतीबाड़ीक हेतु हम कहियो अहाँकेँ किछु नहि लिखलहुँ। आइ-समाइक बात छैक। ओना घरमे अन्न रहैत तँ बेचिकऽ काज चला

लितहुँ से तँ एहि बेर बेसाहे लागत। अहाँक माय बारंबार अपने चलऽ कहैत छथि, मुदा हम जाकऽ भार नहि बनऽ चाहैत छी। तत्काल १५०) रुपैया क कोनो प्रबन्ध कऽ पठा दी से अनुरोध। इति शुभम्।

अही कऽ अभागल
बाबूजी

(सुन्दर चिट्ठी पढ़ि कऽ मचोड़ कऽ टेबुलपर फेक दैत छैक। ओम्हरसँ युवती एक हाथमे हलुआ आ आलूक भुजिया प्लेटमे आ दोसर हाथमे गिलासमे पानि लेने अबैत अछि आ टेबुलपर राखि दैत छैक।)

सुन्दर (युवती दिसत कि)—भानस-क सभ ओरिथान कऽ राखि लियऽ। सिनेमासँ घूब तँ एक कात तरकारी आ दोसर दिस चटपट सोहारी बना लेब।

युवती—चिट्ठी के लिखलनि अछि?

सुन्दर—की अहाँकेँ होइत अछि जे कोनो छोड़ी लिखलक अछि?

युवती (मुसकुराइत)—ते तँ अपने जानी। जँ कानरोसँ साटि-घाटि रखने होयब तँ लिखने होयत। हम तँ गरीबक बेटी छी। भुच्चड़ गाममे नहर अछि। गतेक छकल-बकल की जानऽ गेलिएक।

(युवक प्लेट उठाकऽ जलपान करऽ लगैत अछि।)

युवती—कहलहुँ नहि? गामसँ बाबू लिखलनि अछि? मायक की हाल छनि?

सुन्दर—अहाँ सभ बात ज निकऽ अनठवैत छिएक। बूढ़ाक लटाढम अहाँ नहि ने बुझबनि। आइ २६ तारीख थिक', काल्ह रवि थिकैक। बूढ़ा ठिकिया कऽ तीर छोड़ैत छथिन से नहि देखैत छथिन। बुझैत छथिन—मास लगलपर चिट्ठी पहुँचैत तँ लाथ करबाक अवसर नहि भेटैत। (युवती प्लेट खाली होइत देखि ऊठिकऽ चल जाइत अछि।)

सुन्दर—(स्वगत) कमसँ कम डेढ़ सय पठाउ। डेढ़ सय बड़ थोड़ भेलैक? कुल मिलाकऽ साढ़े चारि सय तँ मास दिनपर उठवैत छी। एक सय सुखयले मकान भाड़ा लागि जाइत अछि। साठि रुपैया दूधवाक भऽ जाइत छैक। तखन जँ डेढ़ सय गाम पठा दियौनि तँ अपने सभ हवा पीबि कऽ जीबू?

(युवती हाथमे एक कप चाह लेने अबैत अछि। हाथ कऽ चाह दैत)

युवती—मायक हाल-समाचार नहि कहलहुँ?

सुन्दर—प्ररे, ओम्हरे बिमारी-सिमारी क नामपर तँ बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि। बेसी नहि, कमसँ कम डेढ़ सय। (एतबा बजैत भूँकेँ जोड़िकऽ ऊपर उठवैत आ ठोरकेँ कतेचिया कऽ विवृत मुखमुद्रा बना

लैत अछि) अच्छा, हम जाबत पँखानासँ अबैत छी ताबत अहाँ सिङ्गर-पटारकऽ कऽ तयार भऽ जाउ। (कहैत चल जाइत अछि।)

(युवती बुशसटकेँ है गरपर लटका दैत छैक, जुत्ताकेँ ब्रशसँ झाड़ि यथास्थान राखि दैत छैक। प्लेट आ गिलासकेँ नेपथ्य दिस राखि गिलासमे पानि आनि टेबुलपर छिच्चा दऽ हाथसँ पोछि टेबुलकेँ एक कात कऽ दैत छैक।)

युवती—(स्वगत) बेटा भऽ कऽ कहैत छथिन बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि। ने जानि माय कोना छथिन? अपना देहें तँ हमरा बड़ सुख अछि। नीके खाउ, नीके पहिरू, नीके-नाँ रूह, मुदा आत्मा कपैत रहैत अछि जे माय बापक रीन...

सुन्दर—(पँखानासँ आबि तौलियासँ हाथ मुँह पोछैत, पत्नी दिस देखि) आहि रे बा, अहाँ एखन धरि कपड़ो नहि बदललहुँ अछि?

युवती—हम कपड़ा नहि बदलब।

सुन्दर—एहिना चलब?

युवती—हम नहि जायब। जकर माय दुःखित रहैतैक, बाते सहायताक हेतु खखनियाँ करतैक से अहाँ जकाँ फुरफुरैमे टाका बूकैत हयत? ने हम जायब ने अहाँकेँ जाय देब।

सुन्दर—(बुशसट पहिरैत जुत्ता दिस बढ़ैत) अहाँ नहि जायब तँ नहि जाउ, हमरो नहि जाय देब से अहाँ हमरा गजियन छी?

युवती—हम अहाँक गजियन कि एक रहब, मुदा जे माय-बाप एतेक सिद्धति सहिकऽ पोसलनि-पाललनि, लिखोलनि-पढ़ोलनि, ताहि मायक बास्तें दवाइ ले' अहाँ कहैत छिएक बूढ़ा झीटऽ चाहैत छथि आ सिनेमामे पाइ फेकऽ जाइत छी से उचित थिकैक?

सुन्दर—उचित अनुचितक ज्ञान अहाँ करबऽ चललहुँ अछि? अहाँकेँ चलबाक हो तँ चलू ने तँ बण्डा चललाह। (जुत्ता पहिरबाक हेतु प्रस्तुत होइत अछि। युवती जुत्ता हाथ कऽ उठा लैत छैक, युवक झूकलि पत्नीकेँ एक लात मारैत अछि। ओकरा हाथसँ जुत्ता खसि पड़ैत छैक, युवक जुत्ता पहिरि चल जाइत अछि। युवती उठबाक चेष्टा करैत रहैत अछि, परदा खसि पड़ैत छैक।)

दोसर दृश्य

(ग्राम्य जीवनक परिवेश। पृष्ठभूमिमे कड़कीक टाटपर लत्ती-फत्ती लतरल। मध्यवित्त परिवारक दलान। एक कात जोड़खट्टापर सूतल एक वृद्ध। पण्डभूमिमे टनटन-टुनटुन घंटक शब्द होइत छैक। एक कातमे एक टा खोप आ खट्टा देखि

पड़ैत छैक । चिड़ै-चुनमनीक शब्दसँ अनुगुंजित वयुमण्डल । कमहि मंचपरस अन्हार कम भेल जाइत छैक आ प्रकाश पसरल जात छैक जाहिसप्रभात होयवाला अनुभव होइत छैक । बड़दक डोरी पकड़ने २६-२७ वर्षक युवक प्रवेश करैत अछि । बड़दके खोप लगल खुट्टामे बांहि दैत छैक । भीतरस घास अनैत देखि बड़द जोरस मुड़ि हनैत छैक जाहिस ओकर गरदनमे लटकल घंटी जोरस बाजल लगैत छैक । खाटपर पड़ल वृद्ध सुगवगाइत अछि । युवक बड़दक पीठ ठीक आगू वड़ैत अछि । युवकक नाम थिकै नून ।)

नून—(बड़द दिस संकेत करैत) ई थिकाह हमर महादेव, विश्वम्भर, हिनके परिश्रमक बलेपर ई फुटानी (चुटकीस मोछ फेरि लैत अछि) जे रहि जागत त अशरणगत लागत हर हे कलुषन एक हिनकर सेवास विमुख कोनो मुखे गृहस्थ सुखक कलना कऽ सकैत अछि । (मुह झपनहि वृद्धक कंठस ध्वनि क्रमशः मुखर होइत जाइत अछि) सीतागम सीताराम, दुर्गा, गंगा, जय बाबा वैदनाथ, कासी बिस्वनाथ (नून ध्वनिदिस साकांक्ष होइत फुर्तीस वृद्धक दिस वड़ैत—)

ई थिकाह हमर प्रजापति, हिनके साधनाक प्रतिफल थिक ई सम्पूर्ण सृष्टि (वृद्धके पथर पंजरस भर्जाति दैत छनि । बड़ा खाटपर ऊठिकऽ बैसैत छथि, बटुआ फोर्ल तमाकू बाहर कऽ तरहस्थीपर रखैत चुनौटीस चुन बाहर कऽ चुनवैत छथि । नून ताबत ऊठिकऽ बड़दक आगूमे देल घासके समष्टिकऽ लग कऽ दैत छैक ।)

बड़ा—रे नून ! आइ तँ दूधक पार छौक । ईहो सिधादार भारीबैमान छौक रतुका दूधक गाभ बाहर कऽ दूध दऽ जाइत छौ, तँ अपने जाकऽ भैस दूहि अनिते ।

नून—बाबू हौ ! जे जमाना एहन बैमान भऽ गेल ते देखैत नै छहक ककरो देहपर रोइयाँ होइ छै । काल्हि मीता कहने रहथ जे हऽर लेबाक होअह त भोरे समाद दिहऽ । पछवगिया डोड़ामे पानि छैक । अगता खाउर लगाकऽ राखि देबऽ चाहै छिए । अइ अभागल बाढ़िकेर कोन ठेकान, कखन हुल सनी चल आओत । ओम्हरेस भैसो दूहिकऽ पठा देबैक । (प्रस्थान)

(वृद्ध खाटपरस ऊठि, तमाकू झाड़ि, ठोर तर लऽ, अंगोछासँ माथके बांहि बड़ना कलगैयाँ लोटा लऽ फराठी ताकऽ लगैत अछि । चारु भाग ताकहेर कऽ नहि भेलापर)

वृद्ध—रय नून ! रय हमर ठेडा के लऽ गेल ?

(एक टा बारहतेरह वर्षक छोड़ा-

नून कथलनि एम्मे पास मुदा छिलै छथि घरपर घास पड़ैत एक भागस अबैत अछि आ दोसर दिस चल जाइत अछि ।)

वृद्ध—(कचकचाकऽ) बेकारे एकरा एत्ते लिखौगी-पढ़ौली । जखनी खेतिए-पथारी करैक छलै तखनी बेकारे ने घरोक अँटा गील कथलक । कतबो कहै छिए बहू नोकरी-चाकरी ताक, महज एकर मतिए मारि देने छै । घाघ के फकड़ा पड़ल लागए—उत्तम खेती, मद्धिम वान, अधम चाकरी भीख निदान । कतबो कहै छिए एत्ते जे बाबू-भैया सब नोकरी करै छै से सब अबुरवाने छै ? एही टोला मे मडनू रायसँ मातवर तँ दोसर नइ ऐछ । दूरापर जोड़ा बड़द, खुट्टापर दू गो भैस, पाँच बीघा सोनवरिसा बाघक जमीन, दस-पाँच मन लगानी-भिड़ानी । ओम्हरो तँ एक्के गो बेटा छै महज ऊहो तँ नोकरी करै छै । हमरा ई छोड़ा सब किचाकचवैत रहैत ऐछ । (ताबत खाटपर पाँजर लग फराठी देखवामे आबि जाइत छैक । वृद्ध लोटा उठा बिदऽ भऽ जाइत अछि । परदा खऽ पड़ैत छैक ।)

तेसर दृश्य

(स्थान—सड़क, पृष्ठभूमि मे बाघवनक वातावरण, बड़दके हाँवाक ध्वनि, बड़दक गरदनिक घंटीक शब्द सुनाइ पड़ैत छैक ।)

सुन्दर—(प्रवेश करैत) मुखे परि-वारमे विवाह भेलापर हमरे जकाँ लोकके भोगऽ पड़ैत छैक । तेहन मुखक संग भऽ गेल जे अनो कमाथल खटायलपय शान्ति-पूर्वक जीवन थापन करव, से नहि भऽ पवैत अछि । कहवौ छैक जकरेले चोरि करी सँह कहय चोग एही मौगीके मुख देबाक खातिर हम शहरमे एक सय टाका दऽ कऽ भाड़पर मकान लेने छी आ यँह मौगी हमरा उपदेश देबऽ लागत । अब नँ हाथ पकड़ऽ लागल अछि । राति जे सिनेमा देखऽ बहरयलियनि से घुमिकऽ डेरानहि गेलियनि । अइरवि एथिकेक । एक्के दिनमे मौगी सोझ भऽ जइतीह ।

(एक दिस सुन्दर जाइत अछि, दोसर दिस सँ नूनक प्रवेश । नून अंगोछा माथमे बन्हेने आ फाँड़ कसने अछि, देहमे सौंसे थालकादो लागल छैक ।)

नून—बेतिओ-पथारीमे कम झंझट रहि छै । मीतान खेबनियाँ कथलहु तँ हऽर भऽ गेल अनाना लगावऽ दू गो, मुदा जनमे किलकति भऽ गेल । कादोके सूखऽ तँ नहि दितिएक, अपने बीधा जगडमे भिड़ि गेलिए । घाती तँ मीता छथिन, वसुधर, हिनकर सेवा करू तँ मेवा पवैत रहू । नून कहै घाघ-

नित्तह खेती दोसरे गाय, जे ने ताकथ तकरे जाथ । जाइ छी गामपरसँ जनसब ले पनपिआइ आनि कऽ देबऽ ले । जायलगत अछि ताबत ओम्हरेसँ सुन्दर प्रवेश कऽ नूनस पृष्ठत छैक—)

सुन्दर—नून रायक घर कोन ठोलापर छनि ?

नून—(अश्वयचकित होइत) सुन्दर हौ ! तो कोना एमहर ? एहे घय भाग हमर ! मोन होइत अछि पाँजमे समष्टि लियऽ, मदा तो बाबू-भैया छह, हमरा सौंसे देहमे माटि लागल अछि, तोहर कपड़ा दूर भऽ जयतह ।

सुन्दर—(आरो बेसी आश्चर्यचकित होइत) अय हौ नून ! तोह थकाह नून राय एम् ए एन फिलाफी ? तोहर आवाजसचि होलथह, चेहरा देखिकऽ नहि चीह सकैत छलियह । गुस्स सप्पत, तोरा देखिकऽ भेल जे कोनो गहिसवार थिक ।

नून—आ तोरा देखिकऽ हमरा भेल जे एम् ए क नामपर ई कोनो कलंक थिक । (कहैत हसैत घिचने लेने चल जाइत छैक । परदा उठैत अछि आ पुरने नूनक दलानक दृश्य देखवामे अबैत अछि । नूनक पिता कुङ्कुर-आचमन करैत देखि पड़ैत छथिन ।)

(सुन्दरक संग नून प्रवेश करैत)

नून—बाबू ! तो जलख कथल कि ने ?

वृद्ध—हऽ रय नून, तोरा अत्रेर भऽ गेलग ताले हम कुछो पानि पी ललिया । कनेक हुक्का भरिकऽ दऽ दिते । (ताबत वृद्धक नजर सुन्दरपर पड़ैत छैक) अय रय नून ! ई तोरा जऽरे के छथुन ?

नून—ईहमर कोलेजिथासंगी थिकाह कहैत हुक्का आनऽ जाय लगैत अछि ।

वृद्ध—सुन, सुन, पाहुन साच्छात विस्तु थिकाह । गिरहस्त के जखनी भागक उदय होइ छै तखनी पाहुन अबैत छथिन । एहिने पीर घोड ले पानि आ बँठले बिछौना लेने आतखनो हुक्का

नून झटकि कऽ चल जाइत अछि ।

वृद्ध—(सुन्दरस) अहाँ की करै छिकी बाबू ?

सुन्दर—हम सविस करैत छी ।

वृद्ध—सविस कोनो चीजक बेपार होइ छै ?

सुन्दर—(मुसकुरा कऽ) व्यापार नहि, नोकरी ।

वृद्ध—प्रोऽऽ, नोकरी करै छिकी । (एही बीचमे पहिलुके छोड़ा फेर पड़ैत अबैत अछि आ चल जाइत अछि—नून)

(शेष पृष्ठ २७ पर)

नारी सभ किछु कऽ सकैत अछि
मुदा अपन इच्छाक विरुद्ध प्रेम नहि कऽ
सकैछ ।

— सुदर्शन
बिगति सत्यक पहिल रास्ताथिक ।

— बायल
कुरुप मनस कुरुप बेहोती नीक ।

— नेम्स रतः

मुथी मनीता चौबरी,
विद्यापुरीकरी, ग्राम पो.—मधेपुरासहर्षा।

आह्वान

भी उदयकान्त झा

धरा गर्ब अछि किनक गान
फिज्जर बनल इतिहास पुराण
स्वजाति ओ स्वदेश लल
जे समर्पण अपन प्राण
के नहि मुल ? के अमर भेल ?
अछिकाहि हल जग किनकल ?
निज कर्म ओ निज धर्म
जे भरल अवनीके गेह
की जन छी ? की सुन छी ?
नाम कीर्ति दधीचि के ?
दोसरबे दुखस हो दुखी
हृषित समपेल देह जे
भिक्षुक बनल छल जे अमर,
मिथिला अमरपुरमे बढल
फिन्तु अछि ई आइ मिथिला
भऽ रहल निज कर्म मिथिला
आउ बाउ, आउ राजा,
गांधू वाणीक हार ताजा
धर हाथ लेखनी तरुआरि
रक्षक नून निज मथिली द्वारिके
माँ मथिली भऽ रहल छथि अघोर
भरि रहल अछि हुनक नयनसमीर
दृष्टि देखि ई अहाँक हृदय नहि जाए ?
की कुल माताक दुख नहि हरए ?
मथिली हमर बोलि ए छथि !
की वाणीक झोलि ए छथि
हम आइ डंठा बजाउ
निज राग सभके सुनाउ

धरजरी, उत्तरवारि टोल, मधुबनी।

स्वार्थ

(पृष्ठ १२ क शेषांश)
प्रवर्तनकगत। ऊँच ऊँचकरत, नीच नीचे।
कुलीनताक परिचय शीलसँ होइत छैक,
छुछे नीक कुलमे जन्म लेनहि नहि।
सही मनुष्यताक प्रतिष्ठा लेल ई मर्म सभ
मानल-बूझल जाय।

जँ नीक भऽ नीक नहि करैत रहब तँ
नीक कोना ? अथलाहक देखाइस अ-
कल्याणकर थिक, नीकेक देखाइस करी।
नीक यह थिक जे परमार्थ दिस बसी रहि

रखी, स्वार्थमे कम। दुःखसँ मे तँ कनेको
रुचि रहब के नहि चाहि—आराधन-धर्म।
मानव-धर्म परस्पर सहयोगिता थिक—
सामाजिकता थिक—विपन्नकेँ त्राण देअ-
बाक हेतु उद्यमशीलता थिक। कुकुर-
कौआक जीवन नहि जीवी—सामाजिक
प्राणी छी तँ सामाजिक जीवन जीवी।
ई तँ पूर्ण-विवेचिते ते समाजमे एकाक
विभक्तिमे दोसर कोना संग दैत छैक
जे आनक हित सोचैत अछि, भगवान
आनक हित साधैत छथिन। जँ से नहियो
मानी, तँयो नीचक फल नीके धरि तँ
मानबे करी।

विद्याबोध

(पृष्ठ १४ क शेषांश)
कयलनि एम ए पास, मुदा छिल छथि
घर घास। सुन्दर विस्मित भेल छोड़ा
दिस देखऽ लगैत अछि।

वृद्ध—की देब' छिऐ बाबू, ई छोड़ा
हमरा एनाहति किचकिचबैत रहै छैछ।
नूनकेँ कसबो कहै छिऐ' क नौकरी-
चाकरी ताब, महज ई काने बात ने
(ताबत काँछ तर कंबल, एक हाथमे
लटा आ एक हाथमे हुक्का लेने नून आवि
जाइत अछि।)

नून—(वृद्धक हाथ कऽ हुक्का आ
सुन्दरक हाथक लोटा दऽ कंबल ओछबैत)
की कहियऽ सुन्दर, ई हमर पिताजी
थिकाह। हिनका एतबे भुक्की लागल
रहैत छनि जे नौकरी ताक, मुदा हम
नौकरी कऽ कऽ पराधीन भऽ जाउ त
वृद्धमाता-पिताक सेवा कयल पार लागत ?
नौकरी त ल लाहिला करय जकरा
डिक्सनरी फमिली माने होइत छैक—
अपन पत्नी आ अपन धोषापूता, जे माय-
बापक ऋणकेँ सरकारी ऋण जकाँ पचा ए
लेबामे बुधियोरी बुझैत हो, मुदा जकरा
अपन निर्वाह योग्य सम्पत्ति होइक, वृद्ध
माता-पिताक उत्तरदायित्व होइक, शानक
उद्देश्यसँ शिक्षा ग्रहण कयने हो सँ नौकरीक
पाछाँ किएक बेहाल होथैत ?

वृद्ध—सुनिधौ ओ बाबू, लिखि-
पढ़िकऽ

नून—हौ सुन्दर, जे अपना देशमे
लिखवा-पढ़वाक अर्थ भऽ गेलैक नौकरी
करब ते ने शिक्षित बेरोजगारक संख्या
सुरसाक मुह जकाँ बसने जाइत
हमरा त जहिए गुरुजी पढौलनि—

माय बाप गुरु सेवामे आसक्त
मूखीजीक, नबुधुनिततय विरक्त
तहिए ठानि लेलहु जे पढ़ब त एम. ए.
भरि, मुदा माय-बापक लग रहि जिनसी
भरि हुनके चरणक सेवा करब। (सुन्दर
नूनक गप्प सुनेत जाइत अछि, मुह विवर्ण
भैल जाइत छैक।)

सुन्दर—(सहसा ऊठिबाऽ ठाढ़ भऽ
जाइत अछि) अच्छा भाइ नून, आवि
आज्ञा दैह।

नून—कथीक आज्ञा दियह ?

सुन्दर—जयबाक।

नून—से किएक ? कतऽस अथलह,
कोम्हर अथलह री किछु ने कहलह आ
आज्ञा मङ्गैत छह।

सुन्दर—अहुरसँ दिग्भ्रान्त भेल अथ-
लह, अगन कर्त्तव्य विसरि गेल छल।
हम दस टाकाक नौकरी कऽ अहंकारमे
आन्हर भऽ गेल छलह। तोहुर पितृभक्ति
भऽ कर्त्तव्यपराधता हमर आँखि फेलि
देलक।

नून—सुन्दर, एतब नहि बनावह
हमर। हम कोन योग्य छी जे ककरो
आँखि खोलि सकब। ई त हमर भाग्य
जे एखनो धरि हम मोने छलियह।

सुन्दर—(नूनकेँ भरि गँज पकड़ि
हिचुकऽ लगैत अछि।)

नून—(छोड़बैत) मया तँहुर ठीक
छह कि किछु गड़बड़ा गेलह अछि ?

सुन्दर—गड़बड़ा गेल छल, मुदा
आब ठीक भऽ गेल। हम माता-पिताक
प्रति अपन उत्तरदायित्व विसरि गेल
छलह। नून, छोड़ हमर। हमर माय
मरणासन्न अछि। हमरा अ.इ.ए ओकर
इरापर लऽ जाकऽ दवाई करयबाक अछि।

नून—बेस, चल जइहऽ, मुदा बिनु
मुह अइठोने दुआरपरसँ कोना जाय
देबह।

सुन्दर—नहि नून, नहि आव पाँचो
मिनटक विलम्ब हमर। सभ नहि अछि।

नून—हम गृहस्थक धर्म छोड़बाक
हेतु तयार नहि छी। दस मिनट लगतह।
(सुन्दर नहि नहि कहैत रहैत छैक,
नून ओकरा भीतर दिस घिचने चल जाइत
छैक। परद. खसि पड़ैत छैक।)

(साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा
आयोजित लेखक-कार्यशाला-शिविर,
वाराणसीमे रचित एकांकी)

मिथिला मिहिर

चन्दाक दर

वार्षिक २५ रु०, अर्द्धवार्षिक १३ रु०

बैमासिक ७ रु०

हम फेर घड़ी देखे छी। मोन पड़ैए, पीने-एगारह तक तँ प्रतीक्षा करबैक अछि। प्रतीक्षा, आ ताहूमे बसक। हमरा लगैए, एहिसें बढ़िकऽ थका देवऽवला दोसर काज नहि भऽ सकैए। हमरा जेना अपन थकनीक असली कारण सहसा भेटि जाइत अछि आ हमर पथर स्वतः सिमेन्टक रेलिंग दिस बढ़ि जाइत अछि। हम ओतऽ जाकऽ बैसऽ चाहैत छी। बसक एखन धरि नहि आथव कोन सीमा धरि हमरा थका देने अछि, से जेना एकाएक हमरा बुझाय लागल अछि आ बुझाईत देरी माथ घूमि गेल अछि, अन्हार जकाँ होबऽ लागल अछि। हम एक तरहसँ अन्धजैसँ रेलिंग धरि पहुँचैत छी आ ओहिपर बैसि जाइत छी। बैसैत देरी हमर आगाँक अन्हार साफ जकाँ होबऽ लगैत अछि। स्टैंडपर बैसल दुनू छौड़ा आव नहि अछि। बीड़ी-वला व्यक्ति सड़कक कात फुटपाथपर चुक्की-मुक्की बैसल अछि। हम किछु काँच धरि ओकरा कोनो चित्रमे बैसल व्यक्ति जकाँ देखैत रहै छी आ हाफी लैत छी। हाफी लैत छी आ कने आश्वस्तिक अनुभव करै छी, यद्यपि ई ज्ञान हमरा विनित्त करैत अछि जे हमर फेफड़ाकेँ अतिरिक्त आक्सीजनक आवश्यकता भऽ गेल छै। हम स्टैंडक पायासँ ओठेंगि जाइत छी आ दुनू पथर रेलिंगपर घऽ कऽ देहकेँ ढील छोड़ि दैत छी। हम सोचै छी, एखन जँ बस आवि जाय, तँ हमरासँ पकड़ल पार लागत ? हम बसक दिशामे मूड़ी घुमाकऽ देखैत छी। मुदा एहू प्रयासमे हमरा जेना अस्थास भेल हो। प्रायः एहि द्वारेँ जे प्रकाशक रेख दूर-दूर धरि नहि देखायल रहथ। मुदा हम सोचै छी, बस अथवा कलना हमरामे कोनो सुरफुरी कहाँ उत्पन्न कयलक ? कोनो आश्चर्य नहि जे बस आवियो जाय, तँ धड़कड़ाकऽ पकड़वाक प्रयास करबाक अपेक्षा एहिना पड़ैत रहिकऽ सुस्तायब हम बेसी पसिन्न करी। से प्रायः एहू द्वारेँ जे घुरिकऽ उपेक्षाक ओतऽ जयबाक विकला हमरा लग अछि। ई ठीक नहि होयत, से हम बुझैत छी। मुदा मुदा हम की कऽ सकै छी ? एखन तँ बुझाईत अछि, एहिना अलस भावसँ पड़ल रहबाक अलावा हम किछु नहि कऽ सकै छी—कमसँ कम किछु काल धरि। एहि बीच जँ बस आविकऽ चल जाओ, तँ चल जाओ। हम सत्ते आँखि मुनि लैत छी।

कते काल बाद आँखि खोलैत छी आ पथर लटका कऽ सोझ भऽ बैसि जाइत छी। आँखि अनायास बसक दिशामे उठि जाइत अछि। बस ठीके आवि रहल अछि आ स्टैंडक एकदम लग आवि गेल अछि। हम धरफड़ा कऽ उठैत छी। एक टा

चौ सा हा
पत्र
चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आइ भोरे स्वतन्त्रता दिवसक उल्लासमय अवसरपर झंडोतोलन देखवाक इच्छासँ दैनिक चर्चा समाप्त करबामे चटक्की कयलहु। उष्णोदकसँ प्रातराचमने विनियोगः करब तावत बाहर बूझि पड़ल जेना मेघ गरजि रहल हो। अकानलहु त भूखन भाइक स्वर स्पष्ट बुझना गेल। हमरा ओतऽ नेनाभूटकाक चाह नहि पीबैत अछि। मात दुनू वेकतीक हेतु दू कप भोरमे बनैत अछि। राति चिन्नी-डिब्बा कतहु राखि देने छलियनि से चारु घरमे तकैत छिछिआइत रहलीह तावत आधा कप पानि पर्यंत जरि गेल छलनि, तेँ डेढ़ कप मात चाह बनिकऽ तैयार भेल छल। ताहूमे पकला जौक, पाथर जकाँ भूखन भाइ पहुँचि गेलाह। डेढ़ कपकेँ तीन कपमे वाँटि दुनू कप हाथमे लेने बाहर दलानपर अयलहु। अखरे चौकीपर बैसवाक आग्रह करैत कप राखि देलियनि।

भूखन भाइ पुछलनि—काहि सँखन कोन खिखरक वीहरिमे तो समा गेल छलाह जे महाजालो खसौलापर कतहु देखि नहि पड़लाह ?

कहलियनि—एक टा कथा लिखवाक फेरमे नुकायल छलहु, भरि दिन दुनियाँ भरिक काजसँ पलखति एने भेटैत रहैत अछि आ ताहिपरस संसार भरिक लोक अपन अपन व्यग्रतेँ आन्ह भेल अवैत अछि।

भूखन भाइ झञ्कारैत बजलाह—तोरा लोकनि खिस्सा-पिहानी लिखि-लिखि, फकड़ा लहरक जोड़ि-जोड़ि मातृभाषाक सेवा करबाक ढोल पीटैत रहऽ आ गामे गाम, नगरे-नगर बाबा विद्यापतिक बर्खीक नामपर रोहुक सीराक कपाल क्रिया करैत रहऽ। कहलक मुसहड़नी अपना घरमे बजवोसँ गेलहु तकर परि करैत हाथ चमका-चमका, एड़ी अलगा-अलगा, कंठ फलका-फलका युग-युगसँ अग्निपथपर चलैत रहबाक फूसि-फटक बात गर्दैत प्रस्ताव पास कऽ अपने हाथेँ मुंगरीसँ अपन पीठ ठोकैत रहऽ। हमरा तँ आगि फुके अछि आगि ! पुरुष मसोम्मातक जिनगी जीवैत आव नहि नीक लगैत अछि। एहि बेर नगरो की छओ कऽ कऽ रहवऽ। एतवा कहैत-कहैत हुनकर आँखि जलद योग फूलकोना समान भऽ गेलनि। क्रोध आ करुणाक एहन अद्भुत सम्मिश्रित रूप एहिस पहिने देखबामे नहि आयल छल।

चाह पीवाक आग्रह करैत हम कहलियनि—हमरापर कथीक आक्रोश अछि ? हमरासँ कोन अपराध भेल अछि जे नगरो की छओ करबापर वृत्त छी ?

अनगध ? एक दीर्घश्वास लैत भूखन भाइ बजलाह—कोनो अपराध नहि। नपुंसक समाजसँ कतहु कोनो अपराध होइक। अपराधोक्त बोध ओकरे होइत छैक जकरा संतर्क ओ अपराधमे भिन्नताक बोध रहैत छैक आ जे आत्मविस्मृतिक गर्तमे आकँठ

पूरा रो' खाली देखाइ दैत अछि आ हम धम्म दऽ खिड़कीक कातवला सीटपर पसरि जाइत छी। बस चलि पड़ल अछि। बस-स्टैंडपरसँ ऊठिकऽ सीट धरिक यात्राक प्रक्रिया हमरा सपना जकाँ लगैत अछि। किछु नहि मोन पड़ैत अछि, सिवाय एतवाक जे बसके रोकथवाक लेल हाथ उठौनेठाढ़ रही, तँ टाड. काँचल जकाँ छल।

हम माथ खिड़कीसँ सटाकऽ ओठेंगि जाइत छी। ठंढा हवाक झोंकानीक लगैत अछि, तँ ज्ञान होइत अछि जे कणार घमा गेल अछि। हमपैटक जेबोसँ हमाल निकालवाक सोचैत छी, मुदा ओहिना ओठेंगल रहै छी। सोचै छी, हवेसँ पसेना सुखाय दिए। हम आँखि मुनि लैत छी आ बसक घर-घराहटि संगीत सुनऽ लगैत छी जे

धसल अछि से अपराध की वृत्तक आ कोना वृत्तक । जकरा माइक दूधक लाज बचय-
बाक चिन्ता रहैत छैक से समाज ने जी-जान अरोपि कऽ फाँड़ भिड़ने रहैत अछि आ
जकरा डूबि मरबाक हेतु एक चुरा पानि पर्यन्त जुटयबाक अवगति नहि रहैत छैक से
अपराधकेँ कोना चिन्हतक । पाइपर बिकायबला हाथी एहन पहाड़ सन देह रखितो
साढ़े तीन हाथक मनुखक आँकुससँ तीतल विलाडि भेल रहैत अछि । धूआँ रखने
होइतक तँ हाथीक डरे सिंह पतनकान लेने घुरैत । तोरालोकनि एहने हाथी छह ।
पीठपर लादि-बादि गाड़ीक गाड़ी चारा लवैत छह आ चिवा-चिवाढाकीक ढकी लिट्टी
करैत जाइत छल । भूखन भाइ कहैत आ अपस्यात होइत रहलाह ।

हम कहलियनि—चाह तँ सेरायल जाइत अछि । भूखन भाइ वमकि उठलाह—
तोरा चाह सेरयबाक चिन्ता छह आ हम तोरालोकनिक सेरायल-शोणित देखि चिन्तासँ
गलन जाइत छी । धामन साप देखने छहक ? भरिगपफी मोट आसाढ़े चारि हाथ लम्बा
हनहन करैत चारक बड़ेरीपर फानि जायत, मुदा होइत अछि अभागल निर्विष, खाली
माल-जालकेँ छानिकऽ दूध पीवि लेनिहार । हमर समाज धामन साप थिक । एहन
धामनसँ आइ काल्हि काज चलनिहार नहि । आइ चाही गहुमनक पोआ हजार-हजार,
डेढ़-डेढ़ हजारसँ उपर जकरा नामपर तो सभ कमाइत छहक तकरा जड़िमे धीपल
माँड़ ढारने जाइत छह आ तोरालोकनि चाह सेरयबाक चिन्तामे नितुआन होइत रहैत
छह । ई शोभा दैत छह ?

हमरा तँ आधा कप चाह छल तकरा काखन ने घोंटि गेल छलहुँ आ एमहर भूखन
भाइक भीषण भाषण क्रमहि उग्रसँ उग्रतर होइत गेलनि—गहुमनक पोआ अछि बंगला
देशक निवासी, लडि गेल, कटि गेल, मरि गेल, टूटि गेल, मुदा माइक दूधक लाज बचयबासँ
वाज नहि आयल । माथपर बलजोरी थोपनिहारक पराभव भेलैक आ ओ समाज मुवितक
साँस लेलक ।

तावत देखैत छी रामलखन मंडल, राजकुमार पाण्डेय, राधेश्याम अग्रवाल, अंजनी
कुमार पोद्दार, राम निरंजन भगत, अशोक कुमार कामत, अरुण कुमार राय, इन्द्रकान्त
सिंह, सत्यन्द्र प्रसाद सिन्हा, पाँचू पासवान, शैलक खलील, राम प्रसाद महतो, राजदेव
यादव आदिक एक झुण्ड मटिया तेलमे भिजाओल कपडाक ऊक बनौने झुण्डक झुण्ड लोक
ओकरा सभक पछोड़ धयने हो-हो करैत गवैत आवि रहल अछि—

अस्तित्व निहित अछि जाहीमे

तकरे जड़िपर कुड़हरि बजरल

अलसायल आँखि कने फोल

फूसक घरपर चिनगी पजरल

हम ई दृश्य देखि चकित रहि गेलहुँ । भूखन भाइक दिस जिज्ञासा भरल दृष्टिसँ
तकलियनि तँ बजलाह—तकै की छह,

अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने ?

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ?

आइ स्वतन्त्रता दिवस थिकैक । बाबू भैया आ पट्टालोकनिक पुरुष थम सनाथ
भेलहुँ, आवहुँ मुआ फरोसगक सेना संघटित अछि । आइ चौराहापर अपन तिरंगा झंडा
फहरायब आ ओकरे लग सण्पत खाइत जायब जे कंठक बोली, माइक बोलीकेँ जाबत धरि
अधिकार नहि देखायब, तावत दम नहि मारब । परसल पात आंगूस घीचि रहल अछि,
से सहि लेब ? एहन अभमानित जीवनसँ मरण श्रेष्ठ थिक ।

ओ आगू बजलाह—देखैत छिएक ऊक, आइ चौराहापर सभकेँ लेसबैक आ एहि
दुर्नीति गढकेँ झरका कऽ राखि देबैक । प्रतिरोध करत तँ मारबैक, मारत तँ छाती खालि
कऽ गोली खा लेब । जँ जीबैत घुरलहुँ तँ तोरालोकनिक हेतु बाकरगंजसँ चूड़ी किनने
अथवह ।

मिश्र टोला, दरभंगा ।

छी । किछु मिलौने-तिलौने त ने रहय
उपेन्द्रा ? मिलाओत की ? हमरा स्वयं
अपन ई विचार बचकानी लागल । आ,
से बोतल ओतहि खोलले गेल रहै-सभक
सामने ।

हम आँखि खोलैत छी । बस एकटा
स्टापर आबिकऽ सकल अछि आ किछु
थाती सभ चढ़ल अछि । एकटा वृद्ध सज्जन
हमर बगलवला खली सीटपर आबिकऽ
बैसि जाइत छथि । हम कने सोझ भऽ
जाइत छी । पाछाँ घुमिकऽ देखै छी, कथटा
सीट एखनो खाली अछि । हमरा ई अन-
सोहोत लगैत अछि जे जखन एतेक रास
आर सीट सभ खली छै, तँ हिनका एतहि
आबिकऽ बैसब कोन आवश्यक छलनि ?
मुदा फेर हम सोचै छी जे क्यों-ले-क्यों
कखनो आबिकऽ बैसियो सकैत छल, आ
क्यों एहन-ओहन जे आवि जाइत—
मानि लियऽ एकसरे दू गोटेक जगह छेकऽ-
वला—तँ ताहिसँ तँ यह वृद्ध बेचारेनीक ।
हम एक बेर उड़ैत नजरिसँ हुनका देखै
छियनि । आ अगिलाक रो क छड़पर झुकि
दुनू बाँहिक बीच माथ टिका लैत छी ।

पता नहि ओहि मुद्रामे बैसबाक
कारण वा बसक चललापर छड़क भीतर
प्रवाहित होवला कम्पनकेँ कणारपर
उघैत रहबाक कारणे, कने काल बाद
मुँहमे पेटक पानि आवि जाइत अछि ।
हम सोझ भऽ कऽ देखैत छी जे तेज चलैत
बससँ खिड़कीक छड़ दने पच्चदऽ फेकब-
तेना जे पछिलुका सीटपर बैसल ककरो
छिटका नहि पड़ै—बेसकठिन काज अछि ।
हम कने काल मुँहमे पानि रोकने राखि
अन्तमे ओकरा घोंटि जायब बेसी निरापेद
बुझै छी । एके बेर पेटसँ हदमदी उठैत
अछि आ हम खिड़कीक छड़क फाँकमे मुँह
स्टा लैत छी । दू-तीन बेर जी ओकाइत
अछि, लगैत अछि जे वमन भऽ जायत,
मुदा होइत नहि अछि । मुँहमे रहि-रहिकऽ
पानि चलि अबैत अछि, जकरा अनका
छिटका पड़बाक डर सभ बेर हम घोंटि
जाइत छी । हम ओताकऽ खिड़कीपरल
मुँडी हँटा लैत छी आ बसमे चारु दिस
तकैत छी । पता नहि बगलमे बैसल वृद्ध
हमर बेचैनी बुझि पबैत छथि वा नहि ।
बसमे कोनो थाती द्वारा वमन करबाक
दृश्य हमरामे सदियन जुगुप्सा उत्पन्न
करैत आयल अछि । मुदा एखन हमि
खिड़कीक छड़ दने वा सीटक नीचाँ निहुनड
कऽ सहयायीक असुविधाक बिना कोनो
ध्यान रखने—निर्विकार भावें—वमन
करबाक बड़ सहज स्थितिमे अग्रन्तकें पावि
रहल छी । आगामे लोकसभक मुँह झल-
फलाय लागल अछि । हम आँखि मुनि
(शेष पृष्ठ २९ पर)

हमरा कतहु दूरसँ अबैत बुझाई रहल
अछि । आखिरी बससँ घुरबामे ई लाभ
धरि छै जे ठाढ़ नहि होबऽ पड़त । एहन
स्थितिमे जँ ठाढ़ भऽ कऽ मानि लियऽ
यात्रा करऽ पड़य ! बाप रे ! ई विचार
मात्र हमरा कष्टकर लागऽ लागल ।
हम एहि बातसँ आश्चर्यक अनुभव
करै छी जे बस आखिर भेटि गेल, घर
आब पहुँचि जायब । जँ कतहु नहि अवि-
तय ? फेर ई विचार हमरामे बेचैनी
उत्पन्न करऽ लागल आ एकरा हम दूर
फेकल । नीके भेला उपेन्द्रा ओतऽ जैतहु,
आ मोन कतहु बेसी खराब भऽ जैतय ?
अजुका मुदा एते तेज किए भऽ गेल ?
मात्रा बेसी भऽ गेल हो, सेहो बात नहि ।
एतेक तँ सभ दिन लैत छी आ पचा लैत

तीत चिरैता घोरल गेल

। श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

बालचन्द बिज्जावइ भाखा जनिक लेखनी ई कहि गेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

विषपी विष शिबि पुरिबामे अछि पड़ल तकर दे करत पुछारि ?
अपनहि यो लेसि ऊक हम अपने घरके रहलहुँ जारि
आबि ला भाषा काननके जे कोकिल गुंजित कऽ गेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

आइ भवानीपुरमे देखी सहजहि उगना बनल बताह,
तेहन मतिभ्रममे सभ पड़ाहुँ, बुझि नहि सकी नीक अधलाह,
अपनहि धक्का मारि संश्रुतिक भित्ति कोना ई ढाहल गेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

बा-करी, तज्जस लऽ अनुगुंजित होइत रहल ब्रजभूमि
जिनो पद नचारी यवन शासको उठला झमि
जिनो पदारीमे अछि सम्प्रति तीत चिरैता घोरल गेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

वेदमन्त्रवत् जनिकर वाणी बिनु भऽ सकय न शुभ-संस्कार
छयो सय वर्ष अवधि बीतल आ एखनहुँ मुग्ध रहय संसार
अपनहि करनीस की हमसभ जानि-बूझि कऽ बनी बलेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

सुरसरि ससरि स्वयं भक्तक लग अयली साक्षी अछि इतिहास
भक्तिक महिमासँ मण्डित विद्यापति मठ दऽ रहल प्रकाश
काल-दीपमे यशोवर्तिका जरइत रहत बिना घृत-तेज
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

राधा-माधव-प्रीतिक पद पढ़ि तजथि चेतना श्रीचैतन्य
कविपति विद्यापति मति माने 'गोविन्द'क पद भक्ति-अनन्य
ककरो मनके मोहि लेब से बुझलहुँ वामा हाथक खेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

हे कविकोकिल, अहँक साधना पौलक भारत उत्कर्ष
चरण-चिह्नपर चलइत मिथिला करइत रहल सदा संघष
के समर्थ अछि अधिगत गौरव-गरिमा पाछाँ सकत धकेल ?
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

हे कविशेखर, कठिन तणक बल अपने पौलहुँ शिव-सायुज्य
पुरुषार्थक पथ-निर्देशक बनि आइ विश्वमे छी सम्पूज्य
शस्त्र-शास्त्र दुनूके सम्यक् रूपे संरक्षण देज
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल

अहँक चरण-वन्दन-अभिनन्दन करक मनोरथ मनहि विलीन
त्रिनुशिवसिंहक मिथिला मिथिला आव लनौ छाथशक्तिविहीन
सङ्ग सुमति वर देखु गोसाउनि रा थि सभ अप्पनामे मेल
दुइ नइ लगइ दुज्जन हासा तखने सभटा हटत झमेल

स्वर्गीय कवि विन्देश्वर

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'भरर' :

जेना कोनो गहन वनमे कोनो कँटाह
गाछ स्वयं उत्पन्न होइत अछि, प्रकृतिएस
रस ग्रहण कऽ बढ़ैत अछि आ प्रकृतिएस
संघर्ष करैत अपना अस्तित्वके बना कऽ
रखने रहैत अछि आ प्राकृतिक प्रकोप सभस
लड़ैत टाढ़ रहैत अछि । ओहि गाछपर
जहिना स्वयंभू कोनो वनजता स्वेच्छास
लतरि ओ चारि जाइत अछि, अपना
फूल तमाइ तसौरभस सम्पूर्ण, वातावरणके
आमोदित करैत रहैत अछि तहिना दर-
भंगा नगरक मिश्र टोला महल्ला स्थित
दिग्घी पोखरि पछबरिया मोहारपर
एक गाछ जनमल छलैक जाहिपर एकटा
प्रतिभांलता लतरल छलैक जाहिमे
छप्रो गोटा फूल पूर्ण विरसित भऽ सलैक
जकर सुमिस हिन्दी, मैथिली, उर्दू,
भोजपुरी आदि अनेक भाषाक काव्य-
काना आमोदित होइत आबि रहल छल ।
दारिद्र्य कीट ओहि गाछक जड़िके कहि-
यास नै कटो जा रहल छलैक, मुनलहु
अवस्मात् ओगाछ अडराकऽ खसि पड़लैक,
ओहिपर लतरललता मुग्धा गेलैक ।
ओहिमे फुलायल फूल सभ कनाम छलैक—
वेदना, परिचय, त्रिमुहानी, कलम, गोल-
मोल आ सखारी । ओहि गाछपर एकटा
चिड़ै खोंता लगौ । छन, जकरा अण्डास

अवश्य, मुदा एकर भीतर जे प्रतिभाक आगि छलक से जयबेर सुनगलै क, पञ्चा गेल आ ई आब जीवन भरि लहकत कहियो ने मात्र धु आइत रहत । . . . पहिल बेर एकरामे 'सालर'क संभावना देखने रहिऐक, दोसर बेर क्रान्तिकारीक आ तेसर बेर ई मात्र समझौतावादी रहि गेल अछि। . . . कहिनहि आबकी होयत? . .

हम तौलियास जल्दी-जल्दी हाथ
पोछैत छी आ मोनमे बात ओरिअबैत
'भावी मंत्री'स भेंट करऽ गतिके तीव्र करैत
'डाइंग रूम' दिस आगाँ बढ़ैत छी !
रसोमे छजहु कि एकटा जोरदार 'हो-
हो...' सुनाइ पड़ल !

“ओ-हो ! मास्टर साहेब !”

भावो संवोक्तः व्यंग्यमिश्रित संवोधन कान्तमे
पडैत अछि ।

उत्तरमे मात दुनु हाथ जोड़ि लैत छी ।

नेपाली शिक्षण समिति, रामस्वरूप राम
सागर क्याम्पस, जनकपुरधाम (नेपाल)

बहरायल पाँच गोट बच्चा छैक जे एखनो
उड़ांत नहि भऽ सकलैक अछि । गाछके
खनि पड़ल कारणे खेतो उजड़ि गेलै
अछि । पाँचो बच्चा बिबलिया रहल छै
आ आबि नहि पारि सकलै । निमूठ चारु बात
चक्रमौरकऽ रहल अछि, अदभुत बातहु
कोनो दृष्टि पथ पर नहि आवि रहलैक
अछि ।

ओ गाछ किछु आन नहि, ओ छलाह लोक कवि विन्देश्वर, सरस्वतीक वरद पुत्र । हुनका हेतु हम दुइ गोट विशेषणक प्रयोग जानि बूझि वासकयलहु अछि । पहिल विशेषण शिखर लोक कवि । एकर अर्थ ई नहि जे ओ लोक गीतरु रचयिता छलाह, प्रत्युत हुनक सम्पूर्ण काव्यकृति सामान्य लोकक बीचवितरित भेलनि तथा प्रसिद्धि पौलकनि । तेना भुटभारक मुहे एखनो सुनि सकैत छी—‘सजमनि भाँटा पति अछि टेकने, खयलाक मोन होअय खा लियऽ एखे ।’ ओ अपन कृति लऽकऽकोनो विद्वान लग नहि पहुँचलाह, प्रत्युत लोक जीवनेमे प्रविष्ट होइत गेलाह । ते हिनका लोककवि कहब सर्वथा उपयुक्त अछि ।

दोसर विशेषण अछि सरस्वतीक वरद पुत्र । वस्तुतः विद्याध्ययन कऽ काव्य-साधनामे लागब भिन्न बात थिक, परन्तु ई त अपन नाम छोड़ि कऽ आन कोनो शब्द पर्यन्त नहि लिखि सकैत छलाह । ई पूर्ब जन्माजित कवित्व प्रतिभा लेनहि माइक कोखिस अवतीर्ण भेल छलाह । आन कवि कागत कलम लऽ कऽ कवि-कर्म करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि, परन्तु ई जखन कखनो भावनाके कल्पनाक पाँखि लगैत अनुभव करैत छलाह, दौड़िकऽ घरक आगू शिव मन्दिरमे चल जाइत छलाह, ढट्ठा फोलि, आपाद मस्तक झार्पि ओहि तरमे पड़ल गुनगुनाइत रहलहु आ कविताक पाँती सभके चौपैति चौपैति कंठमे सजबैत गेलहु, जखन सम्पूर्ण कविता बनिकऽ तै यारभऽ गेल त कोनो विद्यार्थीक ओहि ठाम पहचलहु आ लिपिवद्ध करा लेल ।

आरंभमें ई पाचक बेचैत छलाह ।
एक आध संगी किछु कविता करैत छल-
थिन । एक दिन संगीक मुहे सुनिःस जे
कविता पाचकक पुड़िया नहि थिकैक जे
चटपट बना लेबैह, हिनका मर्मके स्पर्श
कयलनि आ ई अपनाके एक कविक

हृदये प्रतिष्ठापित करवाक हेतु उद्विग्न भङ्ग गेलाह आ सरस्वतीक अनुकम्पा हिनका पर भङ्ग गेलनि । वेदना नामक काव्य प्रसंगामे लिखने छथि—

मैं न कवि हूँ, कवि है माँ,
जाती मुझमें भाव जगा
तो लिख लेता दुखड़ा गा
स्याहीमें निज हृदय उगा”

दृढ़ इच्छा शक्ति मनुष्यके केहनो
दुलभ वस्तु उपलब्ध करा दैत छैक तकर
प्रत्यक्ष प्रमाण छलाह कवि विन्देश्वर ।
एक कविक रूपमे उदित होयबामे हिनका
एक आरो कारण सहायक भेलनि—
'वियोगी होगी पहला कवि, आह से निक्ले
होंगे गान'—से वस्तुतः ई वियोगी छलाह ।
अपन प्रेयसीक वियोगमे ४५ वर्षक अवस्था
दरि ई अविवाहित 'लहं लाकिला सदा मुखी'
जीवन व्यतीत करैत रहलाह आ पाचक
छोड़ि, पोथी छपाकऽ बेचऽ लगलाह । एक
ठाम ओही प्रेयसीके संकेत कऽ लिखने
छथि—

“जी तो चाहता है ज़िगर को चूर कर दूँ मैं,
गम आ के रहता है जहाँ उसी को दूर कर
दूँ मैं
मगर कह देता है कोई ज़िगर में है तेरी
मल का
इसे बरबाद मत करना कसक है यह चमन
गुल का”

दरिद्रताक घोरपंकमे फसल, जीवनक
घात-प्रतिघात सहैत भारत सन देशमे
जतऽ कविताक बल पर जीविका चलायब
केहन केहन साहित्यकार बूने नहि पार
लगलनि आम्बिथिलांचलमे जे एखनो धरि
संसारस पछुप्रायल अछि, सर्वथा असंभव,
मुदा ई एक नहि, आधा दर्जन पुस्तिका
स्वयं प्रकाशित करा प्राथमिक पाठशालास
लऽ महाविद्यालय धरिक विद्यार्थीक बीच
घूमि-घूमि बेचैत रहलाह आएही बल पर
जावत धरि जीविका चलबैत रहलाह
जावत धरि फक्कड़ जीवन वितौलनि,
किन्तु अघेड़ वयस भेलापर जखन घर-
संसार ब्रसौलनि तँ पारिवारिक जीवनक
बोझ पड़ला उत्तर दलपनाक आकाशस
उत्तरि यथार्थताक धरातलपर आबऽ पड़-
लनि । तखनस पुनः कौलिक वृत्ति अपनावऽ
पड़तनि । एमहर आदि त बागज ओ
छपाइ ततेक महंग भऽ गेलैक जे पुस्तक
छपायब बहुत कठिन भऽ गेलैक, किन्तु

१९४८ ई० में हिनका प्रथम कृति वेदना प्रकाशित भेलनि प्रथम संस्करण एक हजार आ ओही वर्ष दू हजारक दोसर संस्करण करौलनि । हम त कहि सकैस छी जे जतेक पोथी ई बेचि लेलनि, बहुत कम नाहिबिकारके एहन सोभाग्य प्राप्त होइत हानजनि । ते एहन निरक्षर ओ संघर्षशील व्यक्ति के हेतु सरस्वतीक वरद पुत्र विशेषण कयमणि अनुपयुक्त नहि ।

वेदना काव्य पुस्तिकामे श्रीयुक्त कलक्टर सिंह 'केसरी' लिखने छथिन—
“इतकी काव्य-सम्पत्ति किसी के कोषको नहीं आई है । अलंकार, पिगल एवं रीति ग्रंथोंने इन्हें कुछ भी नहीं दिया है । शमीवृक्षके अन्तर की आग की तरह इनकी प्रतिभा जीवनके संघर्षमें फट पड़ी है, यह आग किसी अन्य चूल्हे से नहीं आई है । चित्तगारियों में गमी है, दीप्ति की भी कमी नहीं, किन्तु ईन्धन के अभाव में यदि लपटों की प्रचुर अभिवृद्धि नहीं हो पाई हो तो कोई आश्चर्य नहीं । आग का होना क्या कम सोभाग्य को बात है ?” वस्तुतः ईन्धनक अभावमे ई आगि भुम्हुर भेल रहल, ज्वालाक रूपमे धधकि नहि पौलक । ई अपनायुगक कबीर छलाह । ककरो साहित्य पढ़लनि नहि, ते ककरोस प्रभाव ग्रहण करबाक प्रश्ने नहि उठैत अछि ।

आचार्य जगन्नाथ प्रसाद मिश्र उपर्युक्त पुस्तकमे लिखने छथिन—“कवि के जीवन के ताप, दुःख और नैराश्य को भी आशीर्वाद के रूप में ग्रहण किया है । इसे सांसारिक वैभव भले ही न मिला हो, पर अपने काव्य वैभव पर उसे गर्व है । तभी तो कहता है—

कविता ही कवि का जीवन है
धनियों के उत्तुंग भवन से भी ऊंचा
रे जिसका तन है ।”

जन्मजात कवि होयबाक कारणे आपादम्पसक स्वाभिमानस भरल । कोनो मंच हो आ केहनो पैंथ लोक आयोजक होथु, जे कनेको अवहेलनाक आभास भेटल त, तुरन्त तड़डि उठलहु । उपेक्षा सहन करब हिनका हेतु सर्वथा असंभव छल । ग्रहण करबाक अद्भुत क्षमता छनि । पोथीक प्रचार करैत आगाँ बढ़ैत गेलहु, ‘जतहि धड़ त हि घर’ बूझैत छलनि । एही क्रममे भोजपुरी क्षेत्रमे चल गेलाह । ओहि ठामक विद्यार्थी भोजपुरी कविता पढ़ऽ कहलक त भोजपुरीमे बगलक मुना देलहु, उर्दू मोशायरामे गेलहु त उर्दूमे पद जोड़ि लेल, ई सब अपूर्व गुण छलनि । जकरा हरफन मौला कहैत छैक से ई छलाह । आरम्भमे नेना सब के आकर्षित करबाक हेतु विभिन्न जानवरक बोलीबजैत छलाह । आखि मूनिङ सुनिहारके सण्ट

बूझि पड़ितक जे दू टा बनबिलाड़ लड़ि रहल अछि, जन्मौटो कुरुरक बच्चा कुहिर रहल अछि, गदहारेक रहल अछि, दू गोद दन्तरवा कुरुर लड़ि रहल अछि, आदि आदि ।

ओनात ओक संस्करण अछि जाहिमे त एक आध टा मुना दैत छी । जयनगरमे आश्विन पूर्णिमा एवं वसन्त पंचमी दिन निश्चित रूपे कवि-सम्मेलन होइत छैक । एक बेर हम दूनू गोटे बिलंबस पहुचलहु । श्री प्रवासीजी पहिने पहुचि चुकल छलाह । श्रीमस्तराजी कहलथिन— बिन्देश्वर भाइ, अहाँ देरीस अयलहु ते प्रसादमे बुनियात कम्मे बाँचल अछि, बतासा अछि पुष्ट कऽ । ई तुरन्त कहलथिन— सेहो त पाँचे सात टा अनलहु अछि । श्रीमस्तराजी छितनी आनिकऽ राखि देलथिन आ कहलथिन— इच्छा भरिलऽ लैह । ई छितनी ए में हाथ लगा देखथिन । श्री प्रवासीजी कहलथिन— बौआ, सब टा एँ ठा देलही त खाइओ पड़तौक । ई तुरन्त कहैत छथिन— एखन धरित अवश्य अबूह लगैत छल, मुदा तो बौआ कहलहु ताहिसे मोन उछत-गर भऽ गेल । गाड़ीताड़ीमे बयौ कहि दैत अछि— बाबा कने डोलि कऽ वसु ते मोन बुर दमान भऽ जाइत अछि आ तोहर बौआ शब्द बल दुगुना कऽ देलक, आ सरिपहु छितनीओ भरि बतासा भकोसि गेलाह । ई भिन्न बात जे श्री भरि राति पानि पिअबैत रहलनि ।

हमर त्रिफला नामक एक पुस्तिका प्रकाशित भेल । हिनका देलियनि लिखि कऽ—“तो छह भैया स्वयं प्रबुद्ध, त्रिफला करतहु कोठी शुद्ध” ओही वर्ष हिनका त्रिभु-हानी काव्य सङ्कलन प्रकाशित भेलनि त हमरा लिखाकऽ देलनि—“मैं बतहू को करता भेंट, रसगुलामें भांग लपेट” ई कविता लिखिते टा नहि छलाह, हिनक उपस्थापनोक्त ढंग अपनाते विलक्षण होइत छलनि । नाटकक मंचपर अपन अभिनयकलास दर्शकके मुग्ध कऽ लेब हिनका हेतु संहज छलनि ।

हमरा स्मरण नहि अछि जे हिनकास कहिया परिचय भेल । तकर कारण जे ई हमरा जेठ भाइस संगी छलथिन, हुनकोस एक आध वर्ष जेठे आ ओ भाय हमरास १०-११ वर्ष जेठ छलाह । हुनका आरम्भिक निधन भऽ गेलनि, ओसह प्रायः सप्तिद कऽ हमरापर चल अयलनि । अपन जन्म वर्ष ठीक ठीक हिनका अपनो नहि ठेकान छलनि तखन आन के कहत, परन्तु अनुमानक आधारपर कहल जा सकैछ जे ई ६४-६५ वर्षक अवश्य भऽ गेल छलाह आगाँ चलि सभानधर्मा भऽ गेलाक कारणे सम्पर्क बनि गेल आ जखन हम मिश्र

टोलामे अपन आवास बनाओल तखन सम्पर्क सामाजिकतामे बदलि गेल आ सम्बन्ध आतत्त्वमे परिपुष्ट होइत गेल । ते व्यवहारमे संगी जकाँ होइतो हम अग्रज जकाँ आदर करैत छलियनि ।

सभ दिन ए करंग मल कुचैल कपड़ा पहिरो, रुच्छ फरफर वरैत ठाढ़ केण, भरि बाकुटक मर्द हमर बिन्दा भाइ बाट धयने जाइत अबैत रुड़कोपरस डेराक सोझाँ एक हाट दैत जैतथि—“अगर छऽह हो ।”

एखनो ओ स्वर कानमे अनुगुंजित भऽ उठैत अछि त प्राण आकुल भऽ उठैत अछि—ओह ! आव बिन्दा भाइस भेटे नहि होयत ! आव ई मधुर आह्वानक स्वर नहि सुनि सकब ! तखन फेर हिनके पवित्र स्मरण भऽ अबैत अछि—

जगमे पाहुन बनि आयल छी ।
हम ककर बनल, के हमर बनल,
क ई विचार ओझरायल छी”

से पाहुन बिनु किछु पाथेय लेने, बिनु मोटा चोटा बन्हेने एकाएक उठि कऽ चलि देलनि । ककरो किछु कहऽ नहि लगलथिन, ककरो सेवा करबाक अवसर नहि देल-खिन । जहिना जीबैतमे ककरो परवाहि नहि कयलनि तहिना बिनु कोनो परवाहि कयने इहलीला समाप्त कऽ ललनि । संसारमे जे छुटि गेलाह से अपना भाग्यक बलपर भगवानक भरोसे जीवन यापन करैत रहथु । हिनक वेदना निम्नलिखित पवित्र सभमे सदा मुखरित होइत रहतनि—

“यहाँ है निस्सार जीवन
गरल प्याला पी रहा मैं,
हाय रे ! गुस्सा डोकर
आज पथपर जी रहा मैं,
सी रहा मैं एक चिथड़ा
विकल जीवन भर रहा मैं,
आह ! निज अंगार से ही
खाँक होकर जल रहा मैं”

कवि प्रसंग हिनक उक्ति छनि—

पागल ही कवि हो सकता है ।
ऐसा पागल जो कवितेके बल
जगमें कुछ कर सकता है ।”

से वास्तवमे एही पागलपनके जीवनक आदि कालस उधैत, जीवनक झंझावातस लड़ैत, अन्तिम क्षण धरि स्वाभिमानक रक्षा करैत हमर बिन्दा भाइ अपनके कवि पवित्रते प्रतिष्ठापित कऽ मइलाह अछि । देखबाक चाही समाज ओहि निराश्रित परिवारक हेतु किछु करैत अछि वा नहि ।

स्वर्गीय कवि विन्देश्वर

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'भमर' :

जेना कोनो गहन वनमे कोनो काँटाह
गाछ स्वयं उत्पन्न होइत अछि, प्रकृतिएस
रस ग्रहण कऽ बढ़ैत अछि आ प्रकृतिएस
संघर्ष करैत अपना अस्तित्वके बना कऽ
रखने रहैत अछि आ प्राकृतिक प्रकोप सभस
लड़ैत ठाढ़ रहैत अछि। ओहि गाछपर
जहिना स्वयंभू कोनो बनलता स्वेच्छास
लतरि ओ चतरि जाइत अछि, अपना
फूल फाँटैत सौरभस सम्पूर्ण, वातावरणके
आमोदित करैत रहैत अछि तहिना दर-
भंगा नगरक मिश्र टोला महल्ला स्थित
दिग्धी पोखरि पछरिया मोहारपर
एक गाछ जनमल छलैक जाहिपर एकटा
प्रतिभाजता लतरल छलैक जाहिमे
छोटो गोठ फूल पूर्ण विनसित भऽ सकलैक
जतर मुमिस हिन्दी, मैथिली, उर्दू,
भोजपुरी आदि ओक भाषाक काव्य-
काव्य आमोदित होइत आवि रहल छल।
दारिद्र्य कीट ओहि गाछक जड़िके कहि-
यास ने कटे जा रहल छलैक, सुनलहु
अस्पात ओगाछ अडराकऽ खसि पड़लैक,
ओहिपर लतरलता मुरझा गेलैक।
ओहिमे फुलायल फूल सभ कनाम छलैक—
वेदना, परिचय, त्रिमुहानी, कलम, गोल-
मोल आ सखारी। ओहि गाछपर एकटा
चिड़ खोता लगौने छल, जकरा अण्डास

अवश्य, मुदा एकर भोतर जे प्रतिभाक
आगि छलैक से जयबेर सुनलैक, पञ्चा
गेल आ ई आब जीवन भरि लहरत कहियो
ने मात्र धु आइत रहत।... पहिल बेर
एकरामे 'सालर'क संभावना देखने
रहिएक, दोसर बेर कान्तिभारीक आ
तेसर बेर ई मात्र समझौतावादी रहि गेल
अछि।... कहिनहि आबकी होयत?

हम तौलियास जल्दी-जल्दी हाथ
पोछैत छी आ मोनमे बात ओरिअबैत
'भावी मंत्री'स भेंट करऽ गतिके तीव्र करैत
'डाइंग रूम' दिस आगौ बढ़ैत छी।
रसमे छलहु कि एकटा जोरदार 'हो-
हो...' सुनाइ पड़ल।

"ओ-हो!... मास्टर साहेब!"
भावी मंत्रीक व्यंग्यमिश्रित संबोधन कानमे
पड़ैत अछि।

उत्तरमे मात्र दुनू हाथ जोड़ि लैत
छी।

नेपाली शिक्षण समिति, रामस्वरूप राम
सागर क्याम्पस, जनकपुरधाम (नेपाल)

बहरायल पाँच गोट बच्चा छीक जे एखनो
उडाँत नहि भऽ सकलैक अछि। गाछके
खनि पड़ल। कारण खोता उजड़ि गेल।
अछि। पाँचो बच्चा बिलबिला रहल छी
आ ओनो निरिंत मिमूढ चारु वात
चरभाँकऽ रहल अछि, अवनमन पड़लहु
कोनो दृष्टि पथ पर नहि आवि रहलैक
अछि।

ओ गाछ किछु आन नहि, ओ छलाह
लोक कवि विन्देश्वर, सरस्वतीक वरद
पुत्र। हुनका हेतु हम दुइ गोठ विशेषणक
प्रयोग जानि बूझि कऽ कयलहु अछि। पहिल
विशेषण थिक लोक कवि। एकर अर्थ ई
नहि जे ओ लोक भीतर रचयिता छलाह,
प्रत्युत हुनक सम्पूर्ण काव्यकृति सामान्य
लोकक बीच विस्तार भेलनि तथा प्रसिद्धि
पौलकनि। नेना भुटकाक मुहे एखनो
सुनि सकैत छी—'सजमनि भाँटा पति
अछि टेकने, खयबाक मोन होअय खा
लियऽ एखने।' ओ अपन कृति लऽ कऽ कोनो
विद्वान लग नहि पहुँचलाह, प्रत्युत लोक
जीवनेमे प्रविष्ट होइत गेलाह। ते हिनका
लोककवि कहब सर्वथा उपयुक्त अछि।

दोसर विशेषण अछि सरस्वतीक
वरद पुत्र। वस्तुतः विद्याध्ययन कऽ काव्य-
साधनामे लागब भिन्न बात थिक, परन्तु ई
त अपन नाम छोड़ि कऽ आन कोनो
शब्द पर्यन्त नहि लिखि सकैत छलाह।
ई पूर्व जन्माजित कवित्व प्रतिभा लेनहि
माइक कोखस अवतीर्ण भेल छलाह।
आन कवि कागत कलम लऽ कऽ कवि-कर्म
करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि, परन्तु ई
जखन कखनो भावनाके कल्पनाक पाँख
लगैत अनुभव करैत छलाह, दौड़िकऽ
घरक आगू शिव मन्दिरमे चल जाइत
छलाह, ढूँढा फोलि, आपाद मस्तक
साँपि ओहि तरमे पड़ल गुनगुनाइत रहलहु
आ कविताक पाँती सभके चौपेति चौपेति
कठमे सजबैत गेलहु, जखन सम्पूर्ण कविता
बनिकऽ तैयार भऽ गेल त कोनो विद्यार्थीक
ओहि ठाम पहुँचलहु आ लिपिवद्ध करा
लेल।

आरंभमे ई पाचक बेचैत छलाह।
एक आध संगी किछु कविता करैत छल-
यिन। एक दिन संगीक मुहे सुनिकऽ जे
कविता पाचकक पुडिया नहि थिकैक जे
चटपट बना लैबहु, हिनका मर्मके स्पर्श
कयलकनि आ ई अपनके एक कविक

रूपमे प्रतिष्ठापित करबाक हेतु उद्विग्न
भऽ गेलाह आ सरस्वतीक अनुकम्पा हिनका
पर भऽ गेलनि। वेदना नामक काव्य
पुस्तकामे लिखने छथि—

मैं न कवि हूँ, कवि है माँ,
जाती मुझमें भाव जगा
तो लिख लेता दुखड़ा गा
स्याहीमें निज हृदय उगा

दृढ़ इच्छा शक्ति मनुष्यके केहनो
दुर्लभ वस्तु उपलब्ध करा दैत छैक तकर
प्रत्यक्ष प्रमाण छलाह कवि विन्देश्वर।
एक कविक रूपमे उदित होयबामे हिनका
एक आरो कारण सहायक भेलनि—
'वियोगी होगा पहला कवि; आह सैनिकले
होंगे गाँव'—सेवस्तुतः ई वियोगी छलाह।
अपन प्रेयसीक वियोगमे ४५ वर्षक अवस्था
दरिई अविवाहित 'लहं लाडिलासदा सुखी'
जीवन व्यतीत करैत रहलाह आ पाचक
छोड़ि, पोथी छपाकऽ बेचऽ लगलाह। एक
ठाम ओही प्रेयसीके संकेत कऽ लिखने
छथि—

"जी तो चाहता है ज़िगरको चूरकर दू मैं,
गम आ के रहता है जहाँ उसीको दूर कर
दू मैं
मगर कह देता है कोई ज़िगरमें है तेरी
मलका
इसे बरबाद मत करना कसक है यह चमत
गुल का"

दारिद्र्यताक घोरपकमे फसल, जीवनक
घात-प्रतिघात सहैत भारत सन देशमे
जतऽ कविताक बल पर जीविका चलायब
केहन केहन साहित्यकार बुते नहि पार
लगलनि आ मिथिलांचलमे जे एखनो धरि
संसारस पछुआयल अछि, सर्वथा असंभव,
मुदा ई एक नहि, आधा दर्जन पुस्तिका
स्वयं प्रकाशित करा प्राथमिक पाठशालास
लऽ महाविद्यालय धरिक विद्यार्थीक बीच
धूम-धूमि बेचैत रहलाह आ एही बल पर
तावत धरि जीविका चलबैत रहलाह
जावत धरि फकड़ जीवन बितौलनि,
किन्तु अघेड़ वयस भेलापर जखन घर-
संसार बसौलनि त पारिवारिक जीवनक
बोझ पड़ला उत्तर कल्पनाक आकाशस
उत्तरि यथार्थताक धरातलपर आवऽ पड़-
लनि। तखनस पुनः कौलिक वृत्ति अपनाबऽ
पड़लनि। एम्हर आवि त बागत ओ
छपाइ ततेक महंग भऽ गेलैक जे पुस्तक
छपायब बहुत कठिन भऽ गेलैक, किन्तु

१९४८ ई० में हिनका प्रथम कृति वेदना प्रकाशित भेलनि प्रथम संस्करण एक हजार आ ओही वर्ष दू हजारका दोसर संस्करण करीलनि। हम त कहि सकैत छी जे जतेक पोथी ई बेचि लेलनि, बहुत कम साहित्यकारके एहन सौभाग्य प्राप्त होइत होयतनि। ते एहन निरक्षर ओ संघर्ष शोल व्यक्तिह हेतु सरस्वतीक वरद पुत्र विशेषण कथमपि अनुपयुक्त नहि।

वेदना काव्य पुस्तिकामे श्रीयुत कलक्टर सिंह 'बेसरी' लिखने छथिन—
“इनकी काव्य-सम्पत्ति किसी के कोषको नहीं आई है। अलंकार, पिगल एवं रीति ग्रंथोंने इन्हें कुछ भी नहीं दिया है। शमीवृक्षके अन्तर की आग की तरह इनकी प्रतिभा जीवनके संघर्षमे फूट पड़ी है, यह आग किसी अन्य चूल्हे से नहीं आई है। चिनगारियों में गर्मी है, दीप्ति की भी कमी नहीं, किन्तु ईश्वन के अभाव में यदि लपटों की प्रचुर अभिवृद्धि नहीं हो पाई हो तो कोई आश्चर्य नहीं। आग का होना क्या कम सौभाग्य की बात है?” वस्तुतः ईश्वनक अभावमे ई आगि भुम्हुर भेल रहल, ज्वालाक रूपमे धधकि नहि पौलक। ई अपना युगक कबीर छलाह। ककरो साहित्य पढ़लनि नहि, ते ककरोस प्रभाव ग्रहण करवाक प्रश्न नहि उठैत अछि।

आचार्य जगन्नाथ प्रसाद मिश्र उपर्युक्त पुस्तकमे लिखने छथिन—“कवि न जीवन के ताप, दुःख और न राक्ष को भी आशी-विदि के रूप में ग्रहण किया है। इसे सांसारिक वैभव भले ही न मिला हो, पर अपने काव्य वैभव पर उसे गर्व है। तभी तो कहता है—

कविता ही कवि का जीवन है
धनियों के उत्तम भवन से भी ऊंचा
रे जिसका तन है।”

जन्मजात कवि होयबाक कारण आपादमस्तक स्वाभिमानस भरल। कोनो मंच हो आ केहनो पंच लोक आयोजक होथु, जे कनेको अवहेलनाक आभास भेटल त, तुरन्त तड़डि उठबहु। उपेक्षा सहन करब हिनका हेतु सर्वथा असंभव छल। ग्रहण करबाक अद्भुत क्षमता छनि। पोथीक प्रचार रेत आगौ बड़ैत गेलहु, ‘जताहु धड़ त हि घर’ रहैत छनि। एही क्रममे भोजपुरी क्षेत्रमे चल गेलाह। ओहि ठामक विद्यार्थी भोजपुरी कविता पढ़स कहलक त भोजपुरीमे बतोकस सुनै देलहु, उर्दू मोशायरामे गेलहु त उर्दूमे पद जोड़ि लेल, ई सभ अपूर्व गुण छलनि। जकरा हरफन मौला कहैत छैक से ई छलाह। आरम्भमे नेना सभ के आकर्षित करबाक हेतु विभिन्न जानवरक बोली बजैत छलाह। आखि मूतकस सुनिहारके स्वच्छ

बूझि पड़ितक जे दू टा बनबिलाड़ लड़ि रहल अछि, जन्मौटा कुकुरक बच्चा कुहिर रहल अछि, गदहारेक रहल अछि, दू गोटे देन्तरबा कुकुर लड़ि रहल अछि, आदि आदि।

ओनात ओ कसं स्मरण अछि जाहिमेस एक आध टा सुना दैत छी। जयनगरमे आश्विन पूर्णिमा एवं वसन्त पंचमी दिन निश्चित रूप कवि सम्मेलन होइत छैक। एक बेर हम दूनू गोटे बिलबस पढ़ुचलहु। श्री प्रवासीजी पहिने पढ़िब चुकल छलाह। श्रीमस्तराजी कहलथिन—बिन्देश्वर भाइ, अहाँ देरोस अयलहु ते प्रसादमे बुनियात कम्मे बाँचल अछि, बतासा अछि पुष्ट कऽ। ई तुरन्त कहलथिन—सैहो तें पाँचै सात टा अनेलहु अछि। श्रीमस्तराजी छितनी आनिकऽ राखि देलथिन आ कहलथिन—इच्छा भरिलऽ लैह। ई छितनी ए मे हाथ लगा देलथिन। श्री प्रवासीजी कहलथिन—बोआ, सब ठा एँ ठा देलही त खाइओ पड़ितक। ई तुरन्त कहैत छथिन—एखन भरित अवश्य अबूह लगैत छल, मुदा तो बोआ कहलहु ताहिसे मोन उछत-गरै भऽ गेल। गाड़ोताछीमे क्यो कहि दैत अछि—जाबा कने डोलि कऽ बैसू त मोन झरै जमान भऽ जाइत अछि आ तोहिर बोआ शब्द बल बुझा कऽ देलक, आ सरिपहु छितनीओ भरि बतासा भकोसि गेलाह। ई भिन्न बात जे श्री भरि राति पानि पिअबैत रहलनि।

हमर त्रिफला नामक एक पुस्तिका प्रकाशित भेल। हिनका देलथिन लिखि कऽ—“तो छह भैया स्वयं प्रबुद्ध, त्रिफला कारतह कोटो एड” ओही वर्ष हिनक त्रिभु-हानी काव्ये सवालने प्रकाशित भेलनि त हमरा लिखाकऽ देलनि—“मैं बतैह को करता भेट, रसगुलामे भांग सपेट” ई कविता लिखिटे टा नहि छलाह, हिनक उपस्थापनक ढंग अपनामे विलक्षण होइत छलनि। नाटकक मंचपर अपने अभिनयकलास दर्शकके मुग्ध कऽ लेब हिनका हेतु सहज छलनि।

हमरा स्मरण नहि अछि जे हिनकास कहिया परिचय भेल। तँ कारण जे ई हमरा जेठ भाइक संगी छलथिन, हुनकोस एक आध वर्ष जेठ आ ओ भाय हमरास १०-११ वर्ष जेठ छलाह। हुनका आत्मिक निधन भऽ गेलनि, ओनाह प्रायः समिटि कऽ हमरापर चल अयलनि। अपन जन्म वर्ष ठीक ठीक हिनका अपनो नहि ठेकान छलनि तखन आन के कहैत, परन्तु अनुमानक आधारपर कहल जा सकैछ जे ई ६४-६५ बरक अवस्था भऽ गेल छलाह आगौ चलि समानधर्मी भऽ गेलाक कारणे सम्पर्क बनि गेल आ जखन हम मिश्र

टोलामे अपन आवास बनाओल तखन सम्पर्क सामाजिकतामे बदलि गेल आ सम्बन्ध भ्रातृत्वमे परिपुष्ट होइत गेल। ते व्यवहारमे संगी जकाँ होइतो हम अग्रज जकाँ आदर करैत छलथिन।

सभ दिन एक रंग मैल कुचल कपड़ा पहिने, सच्छ फरफर करैत ठाढ़ बेग, भरि बाकुटक मद हमरे बिन्दा भाइ बाइ धयने जाइत अवैत सड़कोपरस डेरक सोझाँ एक हाँक दैत जैतथि—“अमर छँह हो।”

एखनो ओ स्वर कानमे अनुगुञ्जित भऽ उठैत अछि त प्राण आकुल भऽ उठैत अछि—ओह! आब बिन्दा भाइस भेट नहि होयत! आब ई मधुर आत्मानक स्वर नहि सुनि सकब! तखन फेर हिनके पकित स्मरण भऽ अबैत अछि—

जगमे पाहुन बनि आयल छी।
हम ककर बनल, के हमर बनल,
कौ ई बिचार ओझारायल छी”
से पाहुन बिनु किछु पाखेब लेने, बिनु मोटा चोटो बन्हैने एकाएक उठि कऽ चलि देलनि। ककरो किछु कहऽ नहि लगलथिन, ककरो सेवा करबाक अवसर नहि देल-खिन। जहिना जीबैतमे ककरो परवाहि नहि कयलनि तहिना बिनु कोनो परवाहि कयने इहलोला समाप्त कऽ लैतनि। संसारमे जे छुटि गेलाह से अपना भाग्यक बलपर भगवाने वरोसे जिनत यापन करैत रहथु। हिनका वेदना निम्नलिखित पंक्ति सभमे सदा मुखरित होइत रहतनि—

“यहाँ है तिर्यगर जीवन
गरल प्यासा पी रहा मैं,
हाय रे! सुस्मार होकर
आज पथपर जी रहा मैं,
सी रहा मैं एका चिश्ता
विकल जीवन भर रहा मैं,
आह! निज अंगार से ही
खाक होकर जल रहा मैं”

कविक प्रसंग हिनक उचित छनि—

पागल ही कवि हो सकता है।

ऐसा पागल जो कवितके बल

जगमे कुछ कर सकता है।”

से वास्तवमे एही पागलपनके जीवनक आदि कालस उचैत, जीवनक संज्ञावातस लड़ैत, अन्तिम क्षण धेरि स्वाभिमानक रक्षा करैत हमर बिन्दा भाइ अपनाके कविक पंक्तिमे प्रतिष्ठापित कऽ मुझलाह अछि। देखबाक चाही समाज ओहि निराश्रित परिवारक हेतु किछु करैत अछि वा नहि।

मिश्रटोला, दरभंगा।

चारि चतुष्पदी

भी चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

एहने मुँह जँ देलनि विधाता
तँ की अयन। फोड़ि रहल छी
नाक कटौलहुँ अपने, अनको
नाके पकड़ि भम्हाड़ि रहल छी।
खाय पीबि ओ फूकि फाकि कऽ
खतम कयल पुरखाकेर अरजल
आब हथोड़ि रहल छी सगरो
बापक सारा कोड़ि रहल छी।

जे निषेध कयलनि पुरखा से
सभटा आब हविष्य भेल अछि
तीत अकत अतीत लगै अछि
उज्ज्वल आब भविष्य भेल अछि
ज्ञानक गरिमा कहि, गुरुअइ कऽ
सभक बुद्धिके कुण्ठित रखलनि
प्रगतिशील आजुक समाजमे
गुरुक गुरु तेँ शिष्य भेल अछि।

शंका जँ अछि लघु तँ ताही
लेल कोन आवश्यक बैसब
पूर्ण सभ्यकेँ छोट बात ले'
व्यर्थ थिकै शौचालय पैसब।
सङ्कक काते काते ठाढ़े
जखन प्राप्त छै सुविधा सभतरि
तखनो जे बैसल करैत अछि
मूर्ख नाम तकरे दै छै सभ।

दबल नाक जन्मेसँ अछि तेँ
तेँ सभ लोक कह्य नकपिच्चा
एहि बातपर तामस हो तँ
बुझू बुद्धि एखनो अछि खिच्चा।
रोगग्रस्त छथि स्वयं वैद्यजी
अपनो रोग चिन्हा नहि रहलनि
वेथुन अनकर दोष, किन्तु
अड.नेमे लागल छनि टड.धिच्चा

मिश्रटोला, दरभंगा